टूटती नालंदाएं व अन्य एकांकी

टूटती
नालंदाएं व
अन्य एकांकी
लक्ष्मीनारायण रंगा

© लक्ष्मी नारायण रंगा

प्रकाशक कविता प्रकाशन, तेलीवाड़ा बीकानेर ३३४००१

संस्करण प्रथम १९८२

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

मूल्य अठारह रुपये

मुद्रक गणेश कम्पोजिंग एजेंसी द्वारा रूपाभ प्रिंटर्स, दिल्ली ३२

TOOTATI NALANDAYEN *by* L. N Ranga Rs 18 00

प्रकाशकीय

भारतीय रगमच की विकास यात्रा में कदम-कदम चलने के लिए अभी हिन्दी रगमच को कथ्य एव शिल्प के कई आयाम तलाशने हैं एक लम्बा सफर तय करना है। हिन्दी में अभी भी रगमचीय नाटकों का बहुत अभाव है। अत आवश्यक है कि हिन्दी रगमच से जुडे लोग इस दिशा में सर्जनात्मक एव ठोस कदम उठाए ताकि हिन्दी रगमच को समृद्ध एव [illegible] बनाया जा सके। वर्तमान जीवन का दिग्दर्शक दर्पण बनाया जा सके ताकि वह बगाली, मराठी, गुजराती, तथा अन्य भारतीय भाषाओं के रगमच के समकक्ष एव समानान्तर स्थापित हो सके।

श्री लक्ष्मी नारायण रगा ने लगभग २५ वर्ष से अधिक समय तक रगमच के जीवन को जिया है भोगा है। विभिन्न कलाओं एव विधाओं का सर्जनकार एव प्रस्तोता श्री रगा के राष्ट्रीय [illegible] एव राष्ट्रीय समस्याओं से सबद्ध कतिपय श्रेष्ठ रगमचीय एकाकी [illegible] में है।

क्रम

टूटती
नालंदाएं
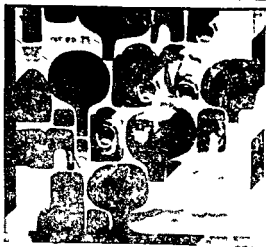
टूटती नालन्दाए

हडनाल घेराव ताडफाड हिमा ।

य सब परिवशज य तथा भावनाजन्य प्रवृत्तिया है, जिन्ह पुलिस, कानून या शक्ति स नहीं राका जा सकता। इस आक्राश का सजनात्मक स्वरूप दिया जा सकता है—आदश उदाहरण प्रस्तुत करक। सहिष्णुता, सहानुभूति, त्यागपूण व्यवहार स ही छात्र शक्ति का राष्ट्रीय सदुपयाग सभव ह। छात्र का समाज और राष्ट्र स जाडा जा सकता है—उसका प्रेम स मन जीतकर उसका स्नह से मस्तिष्क जीतकर अधेर आगन मे आस्था और सकल्प का दीप सजाकर, प्रम विश्वास क बीज बाकर।

—रगा

(आज का बालक कल का भारत हिंसा और हड़ताल की आग से न झुलसे—इस उद्देश्य से राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ करने वाला रंगमंचीय नाटक)

(छात्र आक्रोश को सृजनात्मक स्वरूप देने वाला एवं राष्ट्रीय एकता सुदृढ़ करने वाला समस्यामूलक रंगमंचीय नाटक)

पात्र

१ आचार्य	प्रौढ़ावस्था बाल थोड़े सफेद, प्रभावशाली व्यक्तित्व गंभीर आवाज।
२ अशोक	छात्र-नेता, गर्म मिजाज, तीखी वाणी, चेहरे पर हर समय तनाव, बाल बिखरे।
३ आलोक	छात्र हड़ताल विरोधी भावना वाला, मधुर एवं सहानुभूतिपूर्ण वाणी।
४ अक्बर	छात्र हड़ताल समर्थक, चेहरे पर चालाकी व चिड़चिड़ाहट के भाव बाल रूखे।
५ राकेश	अध्यापक आयु ३०वर्ष, दायरे प्रकृति।

पुलिस इंसपेक्टर, राम आदि चार छात्र।

वेश भूषा साधारण।

आलोक (गंभीरता से) हमारे आचार्य ऐसे नहीं हैं अशोक कि सरस्वती के मंदिर में पुलिस बुलाकर वे अपने ही बच्चों पर हिंसा का प्रयोग कराएं।

अशोक (चारपाई से चेहरे पर उपेक्षा का भाव लिए) हा-हा (व्यंग्य से), बहुत महान् है तुम्हारे आचार्य !

आलोक (स्वर बदलकर पास जाते हुए) अशोक, एक बात पूछूं जवाब दोगे ?

अशोक (असमंजस के भाव से) ऐं हां हां, जल्दी पूछो, मुझे बाहर जाकर हड़ताल का संचालन करना है। (दर्शकों की तरफ आता है—रंगमंच में आगे की ओर)

आलोक (पास आते हुए) इस विद्यालय में तुम क्यों हड़ताल करवाना चाहते हो ? क्यों जहर घोलना चाहते हो अमृत के सागर में ?

अशोक (गुस्से से मुट्ठियां तानकर) इसलिए कि हम सारे देश को आग में झोंक देना चाहते हैं।

आलोक (दुःख से) पर क्यों ?

अशोक क्योंकि हम सिर्फ आग चाहते हैं आलोक, आग हर जगह आग हर स्तर पर आग हर क्षेत्र में आग बस आग ही आग। (पागलों की हंसी हंसता हुआ इधर-उधर घूमता है)

आलोक (दुःख से) पर अशोक इससे क्या हो जाएगा क्या मिल जाएगा तुम्हें ?

अशोक (आक्रोश से) मुझे मिलेगा संतोष मुझे मिलेगी तुष्टि (व्यंग्य से हंस कर) आलोक, जब यह सड़ियल समाज हमें कुछ नहीं दे सकता, तो हम पढ़ने के बाद भी रोजी रोटी नहीं दे सकता। हमें सुख नहीं दे सकता तो हम समाज को क्या सुखी रहने दें ? जितना समाज दुःखी होगा उतना ही हमें संतोष मिलेगा। सुख मिलेगा। (जोर से हंसता है)

आलोक (परेशानी के भाव में) पर इस आग का अन्त क्या होगा ? सारा समाज जल उठेगा। यदि हर आदमी ऐसा ही सोचने लगे तो इस आग का अंत क्या होगा—यह भी सोचा कभी तुमने, अशोक ?

अशोक क्या सोचू मैं ? किसके लिए साचू ? मैं सिफ अपन बारे म सोचता हू । मैं अपना भला चाहता हू, सिफ अपना । मुझे न तो शिक्षालय से प्यार ह न समाज स और न राष्ट से, मुझे अपन से प्यार है, सिफ अपने से । समझे (आलोक के पास जाकर) !

आलोक पर इस पागलपन के दौर मे इन भाले भाल छात्रा को जहरीले काटा म घसीटते हो अशोक ?

अशोक (हसकर) यही तो राजनीति है आलोक ! ये विद्यार्थी जितनी तोड-फोड कर सकते है जिस जोश से काम कर सकते है उतना कोई वग नहीं कर सकता । ये भावुक और मूख होते हैं ।

आलाक मूख नहीं, भाले कहा भोले !

अशाक राजनीति मे भोले शब्द का अथ ही मूख होता है । जो अपना स्वाथ छोडकर खाली पीली सेवा करता है, वह महामूख होता है । आज का राजनीति है दूसरो को मूख बनाआ खुद मजे उडाआ ।

आलोक इसे राजनीति मत कहा—यह दुष्ट नीति है, दानव नीति है । इस नीति म इन छात्रा को बचाओ, अशाक । मेरी यही प्राथना है तुमस ।

अशोक तुम मूख हो आलोक ! कहते हैं—साम दाम, दण्ड भेद—जिस नीति से भी काम निकल सके, निकालो । जो भी मूख बन सके, बनाआ । जसे आगे बढ सको, बढा ।

आलोक (दु खमिश्रित आक्रोश से) यानी दूसरो की लाशा की सीढिया बनाकर खुद ऊचे और ऊचे चढते जाओ ? दूसरा का खून पीकर अपनी उम्र बढाओ । दूसरा का घर बरबाद कर खुद का घर बसाओ दूसरा का

अशोक (बीच म बात काटकर हसत हुए) यही राजनीतिज्ञा की सफलता का रहस्य है प्यारे आलोक ! (आलोक के क धे पर हाथ रखता है) राजनीति सिफ सफलता चाहती है । उचित अनुचित यह नही जानती उसका एक ही उद्देश्य है—सफलता । हर हालत मे सफलता । सफलता क अतिरिक्त कुछ नही । (हाथ हटाकर घूमने लगता है)

आलोक (सोचकर) पर इतनी तोड फोड के लिए, इतन वडे सघप के लिए पसा कहा स आता है तुम्हार पास ?

अशोक (हिचकिचाकर) पैसा पसा (सोचकर) कहीं से आता ही है तुम्ह इसम क्या ? अच्छा मैं ता चला। वाहर व दर सेना का यह लका लूटन को तैयार करना है। (हसता हुआ बाईं ओर चला जाता है)

आलोक (दु ख की सास छोडकर) ओह ! यह नही जानता कि यह क्या करने जा रहा है ? चलू आचाय का सूचना दू। (आलाक दाइ आर विद्यालय क अ दर चला जाता है। रगमच खाली है दूर से रह-रहकर नार लगात के स्वर आत रहते हैं—आचाय मुर्दाबाद ! आचाय हाय हाय ! हमारी मागें, पूरी हा ! हर जार जुल्म की टक्कर म, हडताल हमारा नारा है ! जो हमस टकरायगा, मिट्टी म मिल जाएगा ! छात्र एकता जि दाबाद—आदि। थोडी दर वाद दाइ ओर स आचाय व अध्यापक राकश आत ह। आग आचाय पीछे राकेश)

राकेश (दबे स्वर म) सुन रहे है आचाय आप ? जि ह आप आखा के तारे जिगर के टुकडे कहा करते थे—व आज आपके विरुद्ध मुर्दाबाद के नारे लगा रहे हैं। हाय हाय कर रहे है। दख रहे हैं बदलत जमाने के रगरूप आचाय ? (आचाय रगमच के बीच मे आ जात हैं)

आचाय राकशजी जि दगी इसी का नाम है। यदि जि दगी कभी अमृत की घूट पिलाती है तो कभी जहर की घट भी। जो सम्मान पाता है उस अपमान सहन म भी हिचकिचाना नही चाहिए। राकेशजी कल ये ही वच्चे हर कदम पर श्रद्धा के फूल बिखरते थे आज व ही अगर इस गुमराह मोड पर आकर अगारे उछाल ता उ ह भी हम हसत हसत सहना हागा। (मुस्कराते हैं)

राकेश वह ता ठीक है आचाय पर आपका क्या दोष है ? आप ता सत्य का ही समथन करत रहे हे आप तो

। (बीच म बात काटकर) तभी तो सब कुछ सहना पडेगा राकेशजी !

(लम्बी सास लकर) इतिहास साक्षी है कि सत्य का हर युग मे अग्नि परीक्षा दनी पडती है। ईसा का सत्य के लिए सूली पर चढना पडा सुकरात का जहर पीना पडा गाधीजी को प्राणो की आहुति दनी पडी, फिर हम तो ह ही क्या ? (आचाय बीच वाली कुर्सी पर बैठ जाते हैं)

राकेश वह तो सब ठीक है आचाय, पर इन बच्चो के पीछे राजनीति का काला हाथ है, छिछली राजनीति न उन्ह उकसाया है। अगर ऐस हालात मे हमन उनकी मागें मान ली तो यह सरस्वती का मदिर भी राजनीति क दलदल म डूब जाएगा। समूचा राष्ट्र इस राक्षसी राजनीति की श्मशानी आग से सुलग उठेगा। सुनहरे भविष्य की सुनहरी फसले इस आग म झुलस जाएगी आचाय !
(राकेश आचाय क पास जाता है)

आचाय (आह छोडकर, गभीर स्वर म) आप ठीक कह रहे हैं राकेशजी ! राष्ट्र की इस केसर की क्यारी म यह जहर नही घुलना चाहिए वर्ना सारा चमन जहरीला हो जाएगा। पर यह ता स्वाथ म डूबी राजनीति को साचना चाहिए कि राष्ट्र की सासो मे जहर न घोल।

(आचाय खड होकर बचनी मे घूमन लगत है)

राकेश (पीछे पीछे चलते हुए) जिनकी सासें ही विष-भरी हो, जिनक प्राण ही स्वाथनीति स धडकते हो व तो हर जगह जहर ही फैलाएग। पश्चिमी सभ्यता की सकर औलादे जीवन सागर म जहर के सिवाय मिला भी क्या सकती हैं ? और

आचाय (बीच म ही) जब मथन मे जीवन सागर मे स हलाहल निकलगा तो उस पीन पचान क लिए किसी न किसी को तो विषपायी नीलकठ बनना ही पडगा, वर्ना यह विष इस धरती को उजाड दगा, नष्ट कर दगा, वीरान कर डालेगा। राकेशजी यह काय शिक्षक को ही करना पडेगा क्योकि हम ही राष्ट्र निर्माता है भविष्य के द्रष्टा ह और वतमान क स्रष्टा ह।

(पास आत स्वर—हमारी मागें, पूरी हो ! आचाय

मुर्दाबाद ! जो हमसे टकरायगा, मिट्टी मे मिल जायगा !)

राकश (दबे स्वर म) आचाय, आप अन्दर चल जाइय। मैं पुलिस को फोन करता हू।

आचाय (दृढ स्वर म) नही राकेशजी पुलिस को बुलाना सत्य की हार है सिद्धातो की पराजय है। (चेहरे पर दढ सकल्प क भाव उभर आते हैं)

राकेश (डरते हुए) पर ये भडके है, कुछ भी कर सकते है। आचाय आप अन्दर चले जाइय।

आचाय म सत्य न पथ पर होकर कायर की तरह मुह छिपाऊ, कैसी बातें करते है आप ? मुझे इस असत्य का डटकर सामना करना ही होगा। (रगमच के बीच आकर खडे हो जाते है)

(पाश्व मे स्वर तीव्र हो जाते है—आचाय मुर्दाबाद ! तानाशाही नही चलेगी, नही चलेगी नही चलेगी ! तानाशाही)

राकेश (दबे स्वर मे) आह आचाय जिद कर रहे है चलू पुलिस को टेलीफोन कर दू (बाइ ओर चला जाता है) (आचार्य गभीर साच विचार म डूबे हुए हैं। दो हडताली छात्र—अशोक और अकबर बाईं ओर से आते है शेष छात्र बाहर से नारे लगाते रहते है)

अशोक (तेज स्वर म) जो हमसे टकरायगा

अकबर (उसी लय मे) माटी म मिल जाएगा।

अशोक तानाशाही

अकबर नही चलेगी !

आचाय (गभीर स्वर म छात्रा का सबाधित करते हुए) बेटो ! क्या इतने आक्रोश म हो ? मेरी बात सुनो

अशोक (आगे बढकर आनाशपूण मुद्रा म) हम आपकी कोई बात नही सुननी है।

आचाय (स्नेह स) बेटा अशोक ! तुम मेरे पास आओ।

अशोक हम क्यों आए आपके पास ? आपको गरज है तो आप ही आ जाओ।

आचाय (मुस्कराकर) बेटा अकबर ! तुम जानते हो यह क्या कर रहे हो ?
अकबर (गुस्से से) जी वही जो हम सही लगता है—जो हमारा हक है।
आचाय (शान्त स्वर मे) तुम्हारा हक क्या है जानते हो।
अशोक (पीछे हाकर आचाय की बाइ ओर चला जाता है। आचाय बीच म खडे है। दाइ ओर अकबर ह वातानप करते हुए स्वत त्रतापूवक इधर उधर घूमते है) हम सब जानते है। हमे आपकी राय की कोइ जरूरत नही। हम अपना हक ल क रहेंगे। (बाहर म स्वर) हा ले के ही रहेंगे।
आचाय (समझाते हुए) सोचो बेटा ! अपना हक चाहने म कही तुम किसी दूसरे का हक तो नही छीन रहे हो ?
अकबर हम किसी क हक की परवाह नही, हम अपना हक चाहिए, हम इसाफ चाहिए।
आचाय बेटा अकबर हक और इ साफ की बात करने का हक सिफ उ ह मिलता है जो दूसरा क हक को समझते ह जो दूसरा को इसाफ देते हैं।
अशोक (गुस्से स) आचाय अब हम आपकी चिकनी चुपडी बातो म आने वाले नही है। या ता हमारी मागें माना वना हम हडताल करेंगे। आज यहा, कल सारे शहर म, परसा पूरे दश म।
आचाय (लम्बी सास लेकर) अशोक, यही वह प्रवत्ति है जो समाज और छात्र के बीच एक गहरी खाई खाद रही है। जरा सोचो अशोक आज आम आदमी का छात्र के लिए यह विचार क्या है कि छात्र सिफ हडताल घराव, आगजनी, पत्थरबाजी, आदि हिंसात्मक काय ही करते है अनुशासनहीनता ही अपनाते है ? कितना बडा कलक लगा रहे हो तुम लोग अपने ही हाथा—अपने नाम पर
अशोक आचाय, कलक का टीका हमारे ललाट पर लगाकर समाज चाहे अपनी तुष्टि कर ले, पर दोषी सिफ हम छात्र ही नही हैं। आप ही बताइये छात्र अनुशासन सीखे कहा से ? जब परिवार आज अथयुग का पहिया बनकर रह गया है और उसके पास दम देने की फुरसत ही नही तो हमे आचार और अनुशासन सिखाये कौन ?

जब मोती पैदा करने वाली सीपी ही स्वय गली सडी है तो उसके मोती आबदार कैसे होंगे ?

अकबर आचाय छात्र अनुशासन सीखता है विद्यालय म पर जब स्वय विद्यालय राजनीति के अडडे बन रहे है जहा गुटबदियो के कारण एक दूसरे की टागें खीची जा रही हैं—एक दूसरे शिक्षक को नीचा दिखाने की होड लगी हुई है तो छात्र अनुशासन कहा से सीखेंगे ?

आचाय (बीच म बात काटकर) और अगर मैं इसे यो कहू अकबर अशोक कि छात्र स्वय नेताओ की कठपुतलिया बनकर नाचना चाहते ह तो ? यह इसलिए ताकि उनको सुरक्षा शक्ति और सम्पत्ति सब कुछ मिलती रहे। व खर्चीले चुनाव लड सकें—तोड-फोड करके भी कानून की गिरफ्त से बच सकें।

अशोक (आगे बढकर) मैं इसका विरोध करूगा आचाय ! आज छात्र ही क्या पूरा समाज और पूरा राष्ट्र स्वाथगत भ्रष्ट राजनीति के इशारे पर नाच रहा है फिर भला किशोर और कोमल मन छात्र इससे मुक्त कैसे रह सकता है ?

अकबर (गरम होकर) थोथे सिद्धान्तो की दुहाई देने से कुछ भी नहीं होता आचाय ! आप ही बताइए कि क्या कभी शिक्षक वग ने या नेताओ ने छात्रो के सामने कोई उच्च आदश प्रस्तुत किए है ? क्या त्याग के उदाहरण पेश किये है ? सडक सिनेमा और ससद तथा विधान सभाओ मे वह आए दिन मार पीट तोड फोड मर्यादा-हीनता चरित्रहीनता के दृश्य देखता है। आयाराम और गयाराम के नजारे देखता है तो वह अनुशासन कहा से सीखे ?

आचाय (दीघ निश्वास छोडकर) यह एक जिन्दा हकीकत है बेटा ! पर दूसरे पर दोष लगाकर क्या हम दोषमुक्त हो सकते ह ? शिक्षक को नेताओ को जन्म तो छात्रवग ही देता है—इसलिए समाज के प्रति छात्रवग की क्या कोई अपनी जिम्मेवारी नहीं है ? हिंसा और तोड फोड का रास्ता देश को समाज को कहा ले जाएगा—कभी सोचा है ? कभी सोचा अपने देश और समाज के लिए ?

अशोक (व्यंग्य से) देश और समाज ? किसका देश ? किसका समाज ? क्या दिया है इस देश और समाज ने हमें ? सिर्फ नफरत, तिरस्कार हीनता ? (गुस्से में) अपमान की आग, ठोकरें, बदनामी ?

आचार्य पर समाज ऐसा व्यवहार क्यों करता है—क्या इसके कारणों की ओर भी तुम छात्र-नेताओं का ध्यान गया है ?

अशोक (लापरवाही से) हाँ गया है। इसका कारण है, हम पर थोपे जाने वाले सिद्धान्त और झूठी मर्यादाएँ दमघोटू जंगली परम्पराएँ, आदमखोर रीति रिवाज

अकबर (बीच में बात काटकर) इसके साथ ही हमें दी जाने वाली उद्देश्यहीन शिक्षा मेहनत से दूर ले जाने वाली अनुपयोगी शिक्षा, भारतीय परिवेश और संस्कृति से टूटी हुई पश्चिमी शिक्षा, जिसका उद्देश्य उचित अनुचित तरीके से सिर्फ डिग्री पाना है।

अशोक और डिग्री पाकर शिक्षित बेरोजगार बनकर सरकार के सामने स्वाभिमान की झोली फैलाना, बेरोजगारी भत्ता मांगना और सरकार के रहम पर जीना। हाथ पाँव और शक्ति-सामर्थ्य होने पर भी अशक्त तथा अपंगों की तरह समाज पर भार बनना। इस स्थिति में छात्रों में आक्रोश भर जाना स्वाभाविक है आचार्य, और फिर उतना ही सहज है युवाशक्ति का हिंसा में बदल जाना। जिन पाँवों को हर राह पर काँटे ही मिलते हैं उनके निशान लहू के ही होंगे आचार्य चन्दन के नहीं।

आचार्य मैं इस स्थिति को पूर्णतया स्वीकारता हूँ अशोक और अकबर! पर तुमने कभी यह भी सोचा कि क्या यह हिंसात्मक और अनुशासनहीनता की परम्परा स्थापित कर तुम अपने से पीछे आने वाली पीढ़ी से अनुशासित होने की अपेक्षा कर सकोगे ? आज की तुम्हारी पीढ़ी को कल को राष्ट्र सँभालना है—तब तुम्हारे सामने यह समस्या कितने विकराल रूप में आएगी—यह भी कभी सोचा ?

अशोक (हँसकर)—सोचना और समझना तो इस युग की सबसे बड़ी मूर्खता है आचार्य! सोचने वाला बहुत दुःख भोगता है और फिर

आचाय जिस पीढी का अपने पावा के नीचे की जमीन भी नजर न आए वह क्षितिज के उस पार क्या तलाशे—जिस आज पर भी आस्था नही, वह कल पर क्या विश्वास करे ?

आचाय (पास जाकर) फिर भी अशोक सोचो यदि आज का भारत यह है तो कल का भारत क्या होगा ? (चार छात्र आत हैं—हाथ मे हाकी लोहे के सरिय, कुदाली लकडी लिये)

राम बाहर छात्रो न पूछा है कि क्या देरी है ? (पीछे से आवाजें—जो हमसे टकरायेगा मिटटी म मिल जाएगा)

अकबर अशोक कितन बवकूफ हो तुम ? आचाय हम बाता से फुसला रहे है ताकि पुलिस आकर हम गिरफ्तार कर ले और हमारी यह हडताल असफल हो जाए। सावधान ! यहा धोखे का रेशमी फन्दा फेंका जा रहा है।

अशोक (सावधान होकर) ओह ! मैं भी कितना बवकूफ बन गया। (गुस्से मे) आचाय बोलिए आप मास्टर राजेन्द्र के विरुद्ध कारवाई करेंगे या नही ?

आचाय क्या कारवाई करू अशोक ? क्या गलती की है उन्होन ?

अकबर उसने चन्द्र पर हाथ कसे उठाया ? सबके सामने चन्द्र से माफी मगवाई जाए।

आचाय (दद से) आज बेटा अपने बाप से पूछ रहा है हाथ कसे उठाया ? भूल गये, राजेन्द्रजी तुम्हे पढान के लिए दिन रात कितनी महनत करते हैं ? खून पसीना एक करते हैं ? कितनी एक्स्ट्रा कक्षाए लेते है ? अपना घर परिवार सुख सुविधा, मनोरजन—सब कुछ त्यागकर अपना पारिवारिक जीवन बिगाडकर तुम्हारा भविष्य सवार रहे हैं। उन्हे भी हाथ उठाने का अधिकार नही ? और वह भी उस बालक पर जो अशिष्ट और अनुशासनहीन है ?

अकबर (गुस्से में) हा उसे हाथ उठाने का कोई अधिकार नही। आप उसके विरुद्ध कारवाई करेंगे या नही ? हम आपस अन्तिम बार पूछना चाहते हैं ?

१५ (गभीर स्वर मे) अगर मैं कहू कि नहीं, ता ?

अशोक (क्रोध से) तो हम इस भवन की ईंट स इट बजा देंग ।
अकबर (चीखकर) इसम आग लगा देंगे ।
अशोक (तज स्वर म) हम इसका नामानिशान मिटा देग ।
आचाय पर क्या ?
अशोक इसलिए कि आप पक्षपाती हैं और झूठ हैं ।
अकबर इसलिए कि आप उस मास्टर का निकाल नही सक्त, जिसन हमार साथी पर हाथ उठाया है ?
अशोक (क्राध स) हम उस हाथ का काट डालेंगे ।
आचाय (शा त भाव स) अगर तुम व दूक की नाक पर यह गलत माग पूरी कराना चाहत हो ता सुन ला (दृढ स्वर मे) चाहे कुछ भी हो जाय, मैं तुम्हारी किसी भी जिद को नही मानूगा ।
अकबर नही मानोगे ? ता लो, यह पत्थर। (पत्थर फेंकता है । आचाय को पत्थर लगता है । वह सहलाते है । सिर स खून बहता है ।)
आचाय आह आह (खून मने हाथ देखत हैं)
अकबर (सहमकर) अर ! इनका तो सिर फूट गया, खून बह रहा है ।
अशाक (जोश से) जा हमसे टकराएगा
अकबर माटी म मिल जाएगा । (जोर स पुकारकर) आओ साथियो, अ दर आ जाओ । कई लाग अ दर आते है । गुस्स स भरे, हाथा म पत्थर लाठिया आदि लिय)
अशोक चलो साथियो अ दर चला, इट स इट बजाए । हाथ उठाकर नारा लगाता है । छात्र एकता, जि दाबाद
सभी (तेज स्वर मे) जि दाबाद !
अशोक (आदेशभर स्वर म) चलो अ दर ! (अ दर की तरफ बढते है । आचाय रास्ता राकत हैं ।)
आचाय नही नही नही (रास्ता राकत हुए) तुम्हे अ दर तोड फोड करने के लिए मेरी लाश पर स होकर गुजरना पडेगा ।
अशोक (जोर मे) जा हमस टकराएगा
सब (एक स्वर म) माटी म मिल जाएगा !
अशाक हटा दो आचाय को, रास्त स ।

(कुछ छात्र बढ़त है आचाय को धक्का दत हैं कपड फाडन है जोर स गिरा दत है। साथ ही हाकी स्टिक क दा तीन प्रहार कर उन्ह घायल कर दत है उनक सिर स खून बहता है)

आचाय आह अरे रुको मत तोडो इस मन्दिर को रुक जाओ, र क जा ओ। (बहोश होकर गिर जात हैं)

अशोक (गव स) हु, अब आचाय बेहोश हो गया—चलो अन्दर।

(आचाय क ऊपर स लाघकर अ दर चले जात हैं। रगमच सूना रहता है, अन्दर स अशोक का तीव्र, आवेशपूर्ण स्वर सुनाई पडता है—तोड डालो, फाड डालो, फेंको उखाडो इस अब आग बढो हा हा हा हा। एक अटटहास ध्वनि भी सुनाई पडती है। साथ ही—छात्र एकता जिन्दाबाद—तोड फोड की ध्वनि काफी दर तक गूजती रहती है।

अशोक (तेज स्वर मे) बजा दो इट स इट। तोड डालो टबिलें। हा तोड डालो बचें।

अकबर फोन का कनक्शन काट दो।

राम फोन को तोड डालो।

अकबर आग लगा दो इस फर्नीचर को। हा, जला दो, इस भवन को। फूक डालो।

(पाश्व मे कुछ दर तक तोड फोड जारी रहती है। इधर आचाय को कुछ होश आता है। व धीर धीरे उठते ह)

आचाय होश म आते हुए। आह आह अरे य व कहा गय अन्दर? चलू

(उठकर अन्दर दरवाजे की ओर बढते है। तभी अशोक का आगमन। विक्षिप्त से बाल बिखर हुए, हाफ्ते हुए)

अशोक (दरवाजे स बाहर आता है बिल्कुल हिंसक दिखाई दता है) बोलो आचाय! हमारी मागें मानोग या नही?

आचाय (दृढता स) किसी सूरत म नहीं।

अशोक तो लो। (तमाचा मारता है।) लो लो लो। (मारता है)।

(अक्बर, अकवर पुकारती है। अक्बर आता है, अकबर से) नोच डालो इसका एक एक बाल।

अक्बर (बाल पकडकर) बोल दू झटका और कर दू गजा ? लगाऊ तिलक इस मुलतानी सिगरेट से ? ले (जलती सिगरेट ललाट पर चिपकाता हू।)

आचार्य (दद से) ओह अरे (दढ सकल्प भरे स्वर म ? पर चाहे राम राम जला डालो, मेरी पत-दर पत चमडी खीच डाला अकबर, मगर मैं असत्य और अ याय के आगे झुकन वाला नही।

अशोक (अ दर दखता हुआ, जोर से) तो साथियो, तोड डालो (तोडन की आवाज), तोड डालो य बल्ब बेंचें, ब्लकबोड कुर्सिया और कलम दान। (तोडन की आवाजें)

अशोक (जोर स हसकर) हा हा हा । बोल हमारा कहना नही माना तो दख लिया परिणाम ? तेरा म दिर तेरी आखो के सामन श्मशान बना हुआ है। (पास जाकर) क्त्र बन गया है तुम्हारी जिद के कारण, तरा यह शिक्षालय।

आचार्य (दृढता से) यह शिक्षालय ही क्या, यदि यदि मेरी देह भी श्मशान बन जाए तो भी मैं सत्य का पक्ष नही छोडूगा अशोक।

अशोक (गुस्से स) अच्छा, तो अभी पट्रोल म तुम्हारे सत्य के पक्ष की भी होली जलाता हू। यह रहा पट्रोल का डिब्बा ! अभी जलाता हू इस विद्यालय को।

(गुस्स म भरकर, पेट्रोल का डिब्बा निकालकर ले जाना चाहता है। आचार्य उसे रोक लत ह)

आचार्य अशोक, कान खोलकर सुन लो मैं तुम्ह यह सरस्वती का मन्दिर नही जलान दूगा। तुम्हारा विवाद है तो मुझस है (डिब्बा छीनत हुए) मुझस बदला लो, इस सस्था न तुम्हारा क्या बिगाडा है ? (छीनन हुए) यह पट्रोल का डिब्बा—यह डिब्बा मुझे द दो।

(अशोक डिब्बा लिये हुए आग बढ़ता है। इतन म ही पुलिस इन्स्पक्टर व सिपाही अन्दर प्रविष्ट होत है। वातावरण तनावपूर्ण बना हुआ है)

इ स्पक्टर (जोर से) हमन भवन का चारा तरफ स घेर लिया है (अशोक से) अब काई हरकत मत करा। मर पास तुम्हारा और तुम्हार मित्रा के वार ट है। आप सब अपन का गिरफ्तार समझो। (अशोक की ओर बढता है)

आचाय (बीच म आकर) ठहरिये इ स्पक्टर साहब। मैं पिता और पुत्रा क बीच पुलिस का हस्तक्षेप नही चाहता। क्षमा कीजिए आप मरी बगर अनुमति क विद्यालय म आए है। आप जानते है यह नियम के विरुद्ध है।

इस्पेक्टर म इसे स्वीकार करता हू, आचाय महाद्य। पर मेरी मजबूरी है। मेरे पास अशाक अकबर आदि छात्रो के गिरफ्तारी वारट है।

आचाय गिरफ्तारी के वार ट तो कवल मरी शिकायत पर कटन चाहिए थ। य किसकी शिकायत पर कटे है मैं नही जानता। फिर भी (दृढ स्वर म) इनको गिरफ्तार नही करन दूगा।

इ स्पक्टर जैसा आप चाह। पर मैं पहले ही आगाह कर दू कि शिक्षालय को हिंसक छात्रा न घर रखा है। उनस भी अधिक असामाजिक तत्व चारा ओर मडरा रह हैं। वे किसी भी समय इट से इट बजा सकत है—आग किसी भी घटना के लिए आप जिम्मेदार हाग—यह भी आप समझ लीजिए।

आचाय धन्यवाद! अब म आचाय क नात आपस अनुरोध करता हू कि आप इस भवन के परिसर स बाहर चल जाए।

इ स्पक्टर (गुस्से से) जसा आप चाह। (बाहर चले जाते है)

(अशाक चुप खडा है। ज्याही उसकी नजर आचाय स मिलती है—शम स झुक जाती है। इतन म अ य साथी टूटी हुई इटें लकडी का टुकडा, टेलीफोन का चागा टयूब लाइट, बल्ब हाथ म लिय हाफ्त हुए अन्दर स आत हैं अशोक को सिर झुकाये देखकर व भी धीरे धीरे सिर झुका लत हैं)

आचाय (राहत की सास लेकर) हू अब अब सिर झुकाये क्या खड

हो? अशोक, अकबर तुम्हारी नजरें जमी म क्या धसी हैं, बेटा?

अकबर (हकलाते हुए) जी जी (कुछ लोगों के आने की आवाजें फिर शांत)

आचार्य (कराहते हुए) बस इतना ही बेटा! देखो और कोई बात मन मे मत रखना। मन की सभी मुरादें पूरी कर लेना। इस समाज ने तुम्हे आग दी है न? बदले म तुम आग ही दोगे। परिवेश ने तुम्हे काटे दिये है, तुम भी काटे ही दोगे। परिवार न तुम्हे उपेक्षा और दुःख दिये, है तब तुम वापस उसे ही लौटाओगे। (गहरी सास लेकर) यह सच है, तो हमे यह सब कुछ सहना पडेगा। (सोचकर दृढ स्वर म) तो बढो आगे, यह पूरा शरीर अब तुम्हारे हवाले है। जो चाहो, करो। अग-अग काटकर, अपनी वहशी प्यास बुझा लो। काटो यह हाथ और तोड डालो इन पावो को। लो नोच डालो इन आखो को बढो, अशोक बढो, ले लो समाज का बदला इस देह से आगे आओ अकबर, तुमने जब एक नालन्दा ही तोड दी तो यह शरीर तो कोई अब ही नही रखता उठाओ सिर उठाओ हाथ बढाओ कदम (सभी छात्र सिर झुकाये खड़े हैं अशोक की ओर देखकर) अशोक, लो अपने पेट्रोल का डिब्बा और जला डालो मुझे जिन्दा ही जला डालो।

अशोक (पश्चात्ताप के स्वर म) आचार्यजी—अब एसा न कहिए (भावातिरेक मे, रुधे हुए गले से) एसा न कहिए हम हम हम एसा नही कर सकते।

आचार्य (गहराई से सोचकर) तुम्हारे चेहरे के भावो से स्पष्ट है कि एग जहरीले भाव तुम्हारे दिलो म नही आ सकते। बेटा एस शोर नही बन सकते, जब तक कि कोई उनम जहर न भर दे। सच सच बताओ तुम्हे विद्यालय म सडक पर कौन ले आया?

अशोक (हिचकिचाता हुआ) जी जी जी बात यह है कि

आचार्य घबराओ नही अशोक, सत्य बोलने म ये घबराने हैं, आत्माएं मर चुकी है—मैं जानता हू तुम्हारी

है। बोलो सच सच

अशोक जी वो रमेश के पिताजी हैं न ?

आचाय (आश्चय मे) कौन ? वह नताजी ?

अशोक जी हा, उन्होंने हम सबको घर बुलाया। खूब खिलाया पिलाया फिर हम सबको काफी रुपये दिये और हडताल की सारी योजना समझायी।

अकबर उन्होंने कई विद्यालयों के छात्र-नेताओ, मजदूर सघो के मजदूर-नेताओ और कमचारी नेताओ को पसे देकर हडताल करवाने की बात भी समझायी और हम विद्यालय म आग लगाने के लिए पेट्रोल के लिए पसे भी दिये।

आचाय (घणा से) ओह राजनीति इतनी गिर गई कि मनुष्य अपन छोटे-से स्वाथ के लिए सारे देश को सवनाश की आग म झोकने से नही चूकता। (थोडा ठहरकर सोचते हुए) इस शिक्षालय को जलवाने म उनका क्या प्रयोजन था ?

अकबर यह तो हम पूरी तरह समझ नही सके, पर हा, रमेश ने बताया कि उनके पिताजी को एक विदेशी फम का अफसर खूब धन देता है। वह सरकार को किसी भी तरह ठप्प करवाना चाहता है।

आचाय (दुख मे) ओफ ! तो ये विदेशी हमारे जनतन्त्र की अमर ज्योति को अपनी जहरीली फूको से यू बुझा देना चाहते हैं ? (आह भर कर) पर उन्ह क्या दोष दें जब हमारे लोग ही अपने छोटे छोटे स्वार्थों के लिए देश को बेचने की गद्दारी कर रहे हैं ? हमे एसे काले नागो के विषदत तोडने ही पडेंगे। (रुककर) जानते हो—तुम उनके भडकाने पर क्या करने जा रहे थ ? उसका घिनौना रूप देखो टूटी हुई विद्यालय को देखा। (अन्दर की तोड फोड की ओर इशारा करते हुए अपनी ओर इशारा करते हैं) देखो देखो देखो

अशोक (देखकर रोता हुआ सा) नहीं नही नही

आचाय (गभीर स्वर मे) क्यो नही ? यह नाल दा, यह सरस्वती का

मन्दिर जिसे तुमने तोड़ा है। जानते हो इसको बनाने के लिए तुम्हारे पिताजी ने पेट काटकर दान दिया था। आज तुमने उस दान पर पानी फेर दिया। पिता के हृदय पर एक ऐसा घाव पैदा कर दिया जो जीवन भर कसकता रहेगा।

अकबर (बहुत दुख से) आचार्यजी, हमसे बहुत बड़ी गलती हो गई।

आचार्य अकबर इसे बनाने में तुम्हारे बड़े भाई ने बड़े मन से श्रमदान किया था। तुमने अपने भाई के पसीने की पवित्र बूंदों में [illegible] का विष भर दिया। (राम की ओर जाकर कंधे पर हाथ [illegible]) और राम, तुम्हारी मां ने क्यों इस [illegible], [illegible] भी उनकी आवाज इन दीवारों के कण-कण में गूंज रही है। तुमने अपने ही हाथों अपनी मां की [illegible]।

राम (रोता हुआ-सा) मैंने बहुत बड़ी [illegible]। [illegible] बहुत बड़ी गलती की है।

विवेकानन्द, कोई रवीन्द्र या अरविन्द, कोई गांधी या नेहरू शिक्षा ग्रहण कर सकता था।

राम (रुंधे हुए मन से) बस गुरुदेव बस।

आचार्य (राम के हाथ मे टूटा हुआ बल्ब लेकर) आज तुमने जो यह बल्ब तोड़ा है उनसे देश की कोई झोपड़ी या घर रोशन हो सकता था किसी गांव की गली जग मग हो सकती थी।

अशोक (दुःखी स्वर मे) अब मैं अनुभव करता हू आचार्यजी, कि हमने वास्तव मे घोर अपराध किया है। आप हम

आचार्य (बीच मे ही टेलीफोन का यन्त्र उठाकर) तुमने यह जो टेलीफोन तोड़ डाला है वह किसी नयी अस्पताल मे लगकर कितने ही लोगों के जीवन को बचा सकता था अथवा किसी फायर ब्रिगेड कार्यालय मे लगकर देश के जन धन की रक्षा कर सकता था। (नीचे टूटी पड़ी कलम उठाकर) और तुमने जो यह कलम तोड़ दी है। यह किसी को वाल्मीकि कालिदास शेक्सपियर बना सकती थी और तुमने जो यह धन राशि बर्बाद की है उससे राष्ट्र की किसी योजना के किसी चरण का निर्माण हो सकता था। किसी गांव या कस्बे का रंगरूप सुधर सकता था।

अशोक (रोता हुआ) ओफ ओफ हमने यह क्या किया? (प्रायश्चित्त करते हुए) क्या किया हमने यह?

आचार्य जितने हाथ जितने पांव इस तोड फोड मे लगे उतने अगर किसी निर्माण मे लगते तो एक मन्दिर एक मस्जिद एक गुरुद्वारा या एक गिरिजाघर बन सकता था। (रुंधे हुए गले से) तुमने एक नालन्दा तोड़ दी तुमने एक तक्षशिला तोड दी तुमने एक सरस्वती का मन्दिर तोड दिया।

अशोक हमे अपनी गलती का बहुत दुःख है आचार्यजी वास्तव मे हम दूसरो के बहकावे मे आ गये थे। हमे सजा दीजिए।

अकबर (रोते हुए) हां हां हमे सजा दीजिए। हम सजा भुगतेंगे।

आचार्य (सभी छात्रों के चेहरे पर पश्चात्ताप के भावों को देखकर सच्चा पश्चात्ताप सिर झुकाने से नही होता, बेटो! हाथ उठाकर

पाव चलाकर, परिश्रम करने मे ही पूरा होता है। तुमने जो राष्ट्रीय अपराध किया है उसकी सबसे बडी सजा यही है कि तुम सब मिलकर नव निर्माण म लग जाओ ताकि तुम्हारे पसीने की बूदें मोती बनकर चमक उठें तुम्हारा परिश्रम नया सूरज बनकर चमके और तुम्हारी सासें सुगन्ध बनकर फैलें, सिर उठाओ, बेटो !

(सभी धीरे धीरे सिर ऊपर उठाते हैं। उनकी आखो मे आस्था की चमक नजर आती है।)

सभी छात्र (दु ख से) सच है आचार्यवर, आज हमारा यह गुलिस्तां जगह जगह स टूट रहा है, कही धर्म के हाथो, कही भाषा के हाथो कही प्रान्ता क हाथो कही जाति पाति, क हाथो कही छुआछूत के हाथो (दु ख स) आह हमारे घर की क्या दुदशा है ?

आचार्य (प्रेरणा-भरे स्वर मे) तो आगे बढो यह बिखरा उजडा चमन तुम्हे पुकार रहा है नया सवेरा तुम्हे आवाज दे रहा है नया भविष्य तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा है अपनी आशा, विश्वास और आस्था के स्वर स इसे गुजा दो। अपने हाथो से नये भारत का निमाण करो। (सभी जोश और प्रेरणा से भर उठते है।)

अकबर हा हम देश के भविष्य की नयी रचना करेंगे।

आचार्य वायदा करो कि तुम एक ऐसी नयी दुनिया का निर्माण करोगे जिसमे हिंसा, अपराध और विनाश के लिए स्थान नही होगा। जिसमे समता और ममता हो—एकता और प्रेम हो।

अकबर (आवेश म) हम आपके सपनो को साकार करने का सकल्प लेते हैं आचार्यवर !

अशोक (भावावेश म आचाय के मस्तिष्क से बहते खून से तिलक करते हुए) हम आपके मस्तक से बहते इस पवित्र रक्त से तिलक लगाकर शपथ लेते हैं कि हम सब युवा शक्ति को सजन की ओर मोड देंगे। सजन ही हमारा धर्म है, सजन ही हमारा कर्म है (धीरे धीरे पर्दा गिरता है) सृजन ही हमारा जीवन है—सजन ही हमारा उद्देश्य है। (सभी सकल्प स भरे नजर आते है)

(पर्दा गिरता है।)

मौत का देवता

पर्दा उठने पर अस्पताल का दश्य सामने दरवाजे पर आपरेशन थियेटर अक्ति है। सामन बरामदा सा है जो बाइ ओर अस्पताल के बाहर की ओर खुलता है दाइ ओर अस्पताल के अन्दर की ओर खुलता है। रगमच के बीच खडा डाक्टर नवनीत लिफाफे मे से एक्स रे चित्र निकालकर देखता है। पास ही सेठ जगत नारायण गभीर एव चेहरे पर गहरे दुख के भाव लिये खडे हैं।

पात्र

१ नवनीत — डॉक्टर।
२ जगत नारायण — त्यागी समाज-सेवी सेठ।
३ रमेश — जगत नारायण का युवा बीमार बेटा।
४ लज्जा — रमेश की नवविवाहिता पत्नी।
५ मनेजर — जगत नारायण का मनेजर।
६ एक या दो अटेंडेंट।

नवनीत हु यह एक्स रे चित्र (सोचते हुए) हू होपलस (दीर्घ नि श्वास छोडकर) हू अब अब यह भी देख लू (लिफाफा खोलकर नया चित्र देखता हुआ) हु हू ? (दीर्घ नि श्वास) आह् माइ गाड।

सेठ (दीन स्वर म) डाक्टर साहब ! (थोडी देर रुककर) डाक्टर साहब !

नवनीत हू (सोच म डूबा हुआ चुप)

सेठ (दु खी स्वर म) डॉक्टर साहब !

नवनीत (लम्बा सास छोडकर) हा कहिये सेठ साहब ?

सेठ (रुआसे स्वर म) डाक्टर साहब मेरा रमेश बच तो जाएगा न ? (दीन स्वर म) डाक्टर साहब यह मेरा इकलौता लडका है। बचपन म ही इसकी मा मर गई थी डॉक्टर साहब।

नवनीत (सहानुभूति प्रकट करते हुए) ओह् ! (घूमने लगता है सेठ पीछे पीछे जाता है)

सेठ मैंने ही इसको बडे प्यार म पाला है डाक्टर साहब म ही इसकी मा था और मैं ही इसका बाप हू।

नवनीत (गभीर स्वर म) ओह आई सी। (रुक जाता है)

सेठ (रोता हुआ सा) डाक्टर साहब ! अभी इसका विवाह हुए छह माह भी नही हुए।

नवनीत (दद स) ओह माई गाड ! (बहुत परशान नजर आता है)

सेठ (कम्पन-दीन स्वर म) डाक्टर साहब, मरा रमश बच ता जाएगा न ? ठहरकर (हाथ जोडकर) डॉक्टर साहब, इसे बचा लीजिए

इसे बचा लीजिए। (रोता हुआ) मैं आपके परों पडता हू मेरे रमेश, मेरे बच्चे को बचा लीजिए।

(डॉक्टर के पैरों में झुकता है डाक्टर रोकते हुए)

नवनीत सेठ जगत नारायणजी ऐसा न कीजिए। आप शहर के रेप्यूटेड पर्सनलिटी हैं इतने बडे समाज सेवी हु, इतना बडा व्यापार है आपका आपको ऐसा करना शोभा नही देता। जरा हिम्मत रखिए।

सेठ डॉक्टर साहब हिम्मत कैसे रखू ? मेरा बेटा मौत से जूझ रहा है। मैं पत्थर कैसे बन जाऊ ? डॉक्टर साहब जितना पैसा लगे, लगा दीजिए। जहा से दवा मगानी हो, मगा लीजिए। दुनिया के किसी भी डाक्टर को बुलाना हो, बुला लीजिए। मैं सब कुछ लुटा दूगा। (रोता सा) मेरे रमेश मेरे रमेश के प्राण बचा लीजिए।

नवनीत (कधे को थपथपाकर) धीरज रखिए सेठ साहब ! इलाज करने मे हम कोई कसर नही रख रहे है, आगे सब भगवान के हाथ है। आप दवा के साथ दुआओ पर भी विश्वास रखिये। आप समाज की इतनी सेवा करते हैं। जनता को शुद्ध एव पौष्टिक आहार देने के लिए आपने 'आदर्श अन्नपूर्णा भण्डार' खोल रखा है जनता की दुआए आपके साथ हैं जनता आपको देवता कहती है।

सेठ (हिचकिचाते हुए) जी जी वो वो तो है ही जनता की दुआए जनता की दुआए तो मेरे साथ है ही पर फिर भी आपकी दया के बिना कुछ नही हो सकता आप मेरे रमेश को

नवनीत दया भगवान की काम आएगी सेठ साहब ! जरा ध्यान से सुनिये, हम

सेठ (उतावली से) हमे क्या डॉक्टर साहब ?

नवनीत हमे रमेश का एक आपरेशन और करना पडेगा।

सेठ (घबराकर) डाक्टर साहब आप दो आपरेशन तो कर चुके अब एक आपरेशन और ?(रोने लगता है)

नवनीत (दु खी स्वर मे) क्या करे सेठ साहब ? इसके सिवाय कोई चारा

भी तो नही है। हम खुद हैल्पलेस महसूस करते हैं। रोग पूरी तरह पक्ड म भी तो नही आ रहा। किडनी काम नही करती लीवर और लग्स मे सूजन है आतें गल गई हैं। कुछ समझ मे नही आता, बात क्या है ?

सेठ (घबराकर) डाक्टर साहब ! अब क्या होगा ? मेरा रमेश

नवनीत (सभलकर) ओह ! कोई खास बात नही। आप चिन्ता न कीजिए। दवा और भगवान पर भरोसा रखिए जो दूसरो का भला करते हैं भगवान उनका सदा भला करता है। हैव पेस स आपरेशन तो करना ही पडेगा।

(डॉक्टर पीठ थपथपाकर दाइ ओर चला जाता है)

सेठ (लम्बी आह छोडकर) जसी भगवान की इच्छा !

(राशनी बुझती है पाश्व म गिलास म दवा उडेलने तथा पीने की आवाज और साथ ही खासने की आवाज। पाश्व म डायलाग के बीच स्ट्रेचर चलन, दवा उडेलन, इजेक्शन दने पर मरीज के चिलाने की आवाज। रोशनी होने पर रगमच पर स्ट्रेचर पर बठा रमेश नजर आता है)

रमेश (कराहते हुए) ओह सारे शरीर मे आग-सी लग रही है अग-अग दुख रहे है लगता है यह बीमारी मरे प्राण ही ले लेगी (कराहता है) ओह दा दो आपरेशन हो गय। तीसरे की तयारी है। बीमारी पक्ड मे नही आती। (दुखी स्वर मे) यह सब क्या हो रहा है मरे साथ किडनी काय नही करती लीवर व लग्स पर सूजन आतें गल गई हैं ओह यह दद अब नही सहा जाता आह इससे तो मौत अच्छी मौत ! (सोचकर) पर मैं मैं तो मरकर इस दन्द से मुक्ति पा लूगा पर बेचारी लज्जा का क्या होगा ? ओह कितनी अभागी है मरी लज्जा ? अभी विवाह को छह माह भी नही हुए और मैं मैं मौत का शिकार हो गया। (गहरा नि श्वास) बेचारी (पाश्व स आती लज्जा का स्वर समीप आता है)

लज्जा नस नस ! अब तो उनको आराम है न, रात को नीद तो आ

गई न उन्ह ?

रमेश (सभलता हुआ) ओह ! मुझे अपने पर काबू पाना चाहिए, वर्ना वर्ना मेरा तडपना देखकर लज्जा मर जाएगी। कितना प्यार करती है मुझसे ? (लज्जा बाइं ओर से आती है)

लज्जा (पास आकर) हेलो ! वरी वरी गुड मार्निंग डियर !

रमेश (बनावटी हंसी व खुशी प्रकट करते हुए) थैंक्यू ! वेरी मच्च डार्लिंग। हाउ आर यू ?

लज्जा थैंक्यू, वरी फाइन ! आज तो आप काफी ठीक दिखाई दे रहे है ? वेरी स्वीट, वरी स्मार्ट।

रमेश थैंक्यू फार यार लविंग कम्पलीमेन्टस छुईमुई। (हसता है)

लज्जा (हसती हुई) हू तो मैं छुईमुई हू ?

रमेश और क्या (भावुक स्वर मे) हसती हो, तो जैसे अमृत का झरना बहता है। रोती हो, तो जैसे सावन बरसता है। एक क्षण मे ऐसी महक जाती हो जैसे रातरानी और दूसरे ही क्षण ऐसी मुरझा जाती हो जसे आग से घिरी सोनजुही। यू आर रियली वरी सेंटिमेटल एण्ड इमाशनल डार्लिंग !

(तेज खासी का दौरा पडता है, रमेश छाती पकडकर थोडा सा कराहता है।)

लज्जा अरे अरे ! यह आपको क्या हो गया ? (रोती सी) क्या हो रहा है आपका ? (पीठ पर हाथ फेरती है)

रमेश (दर्द भरे स्वर मे कराहट के साथ) कुछ नही। (खासकर) कुछ भी तो नही। बस यू ही जरा सी खासी आ गई।

लज्जा मुझे बहलाइये मत। सुना है आपका आज फिर ऑपरेशन होगा ?

रमेश (दर्द को दबाते हुए) नही नही। तुम्हे किसने कहा ?

लज्जा वैसे ही सुन लिया। फिर आपका स्ट्रेचर आपरेशन थियेटर के सामने खडा होना इसी का सूचक है। (दर्द से) यह आपको क्या हो गया है कि आपरेशन इतनी जल्दी जल्दी हो रहे हैं ?

रमेश (बनावटी हसी हसता है) तो क्या हुआ ? जब मर्ज है तो इलाज जरूरी है। और इलाज जरूरी है, तो ऑपरेशन जरूरी है, फिर

डरन की क्या बात है, (प्यार स) हु ?

लज्जा (रुआसी सी) न जाने क्या मुझे इस बार डर लग रहा है ? पहली दो बार तो मैंने बहुत हिम्मत रखी पर अब अब (रोन लगती है) अब हिम्मत कैसे रखू ?

(रमेश का हाथ अपने हाथ म ले लेती है)

रमेश (धीरज बधाता हुआ) देखो, लज्जा ! ऐसे हिम्मत नही हारनी चाहिए। रोने से तो रोग कटेगा नही। फिर तुम्हारे प्यार क सहारे ही तो मैं मौत को हरा पा रहा हू। और तुम्ही अगर ऐसा करोगी तो मुझ पर इसका-क्या असर पडगा ? मैं किसके सहारे जीत पाऊगा मौत को ? है ?

लज्जा (अपने को सभालती हुई) ओह ! आई एम एब्स्यूलटली सारी। न जाने क्यों कभी-कभी मैं बहुत इमोशनल हो जाती हू। (फीकी हसी हसती है आंसू पोछती है) आखिर नारी हू न ?

रमेश नारी तो महाशक्ति है लज्जा ! वही मा बनकर ज म देती है, बहन बनकर स्नेह देती है पत्नी बनकर प्यार देती है। (दद स) लज्जा मेरी मा तो बचपन म मर गई। बहन कोई थी नही। अब मुझे तो तुम्ही स प्यार स्नेह सब कुछ मिला है। तुम्ही मेरे तरसत मरुस्थल म सावन की बौछार बनकर बरसी हो तुम्ही अधेरी राहो मे शमा बनकर चमकी हो। तुम्ही

लज्जा (भावुक होकर) बस रमश बस। मैं भी प्यार की प्यासी सीपी हू। इतना प्यार न दो कि इसे प्राणो क आचल म सभाल ही न पाऊ। मैं तो सिफ आपकी परछाईं हू रमेश ! आपके पावो का चिह्न हू। आप मेरे दवता हैं मेरे प्राणो की धडकन हैं मेरी आखो की रोशनी हैं, मेरे जीवन की खुशबू हैं आपके सिवाय इस ससार म मेरा है ही कौन ?

रमेश (दद स) बस लज्जा बस ! मैं मैं तुम्ह प्यार दे ही कहा सका ? अभी तो तेरे हाथो की महदी भी नही उतरी। अभी मैंने तुम्ह जी भर कर देखा ही कहा ? अभी तुमसे प्यार के दो शब्द भी नही बोल सका अभी तो अभी तो अभी तो (रोकने पर भी ददं

की आह निकल जाती है) आह अरे !

लज्जा (हडबडाकर) क्या हुआ क्या हुआ आपको ?

रमेश (सभलकर) अ कुछ नही कुछ नही लज्जा। (दद को दबाते हुए) कुछ भी तो नही, बस जरा यू ही।

लज्जा (रोती सी) मुझे बहलाने के लिए लाख अपने को दु ख द लो रमेश, पर दद छिपाय छिप नही सकता। मैं जानती हू कि आप भयकर दद सहकर भी मेरे सामने हसने की कोशिश करगे। कितना प्यार करते है आप मुझसे ! अगर अगर आपको कुछ हो गया तो मैं क्या करूगी ? (रोने लगती है)

रमेश (कृत्रिम हसी हसकर) बस फिर वही लिजलिजापन। बन गई न आसुओ की ढेरी ! अरे लज्जा, मुझे चाहिए मुस्कान और हसी का झरना। ए स्माइलिंग टाय। ए चार्मिंग डाल। लज्जा प्लीज स्माइल वन मोनालिज़ा स्माइल। (हसते हुए) वन मिलियन डालर स्माइल। प्लीज यस यस यस ! (लज्जा धीरे से हसती है) यस-यस-यस लाइक दट !

(दोनो हसते है। पाश्व म मदिर की घटिया तथा शखध्वनि सुनाई दती है।)

लज्जा (चौंककर) रमेश ! पिताजी डॉक्टर क पास गय है। आ ही रहे होगे। यदि आप इजाजत दें तो मैं एक बार मदिर जाकर भगवान से अपने सौभाग्य की भीख माग आऊ।

रमेश हा हा, जरूर।(लज्जा रमेश को प्यासी भावभरी नजरो से देखकर जाती है रमेश लेट जाता है। थोडी दर बाद दाइ ओर स डाक्टर नवनीत आता है। पीछे सेठ आता है, रमेश दोनो का वार्तालाप चुपचाप सुनता है)

सेठ (घबराते हुए) डॉक्टर साहब, डाक्टर साहब ! मेरा रमेश ठीक हो जायगा न ? इस आपरेशन के बाद तो वह स्वस्थ हो जाएगा न ?

नवनीत फिर वही बात, सेठजी ! प्लीज धीरज रखिए।

सेठ क्या करू डॉक्टर साहब ! बाप हू न ? अपने को काबू करने की

लाख कोशिश करता हू, पर मन फिर बेकाबू हो जाता है।

नवनीत अपनी सतान सभी को प्यारी होती है, सेठजी ! हर बाप अपनी सतान के लिए यू ही तडपता है, पर एसा करन स क्या हासिल होगा ? बी बोल्ड लाइफ इज लाइक दैट। फेस इट।

सेठ (समलत हुए) हा हा, यह तो है ही। पर डाक्टर साहब

नवनीत भगवान सब ठीक करेगा, सेठ साहब। उस पर भरोसा रखिए। देखिए इधर रमेश स्ट्रेचर पर लेटा है। अपने को सभालिए। रमेश ने आपको इस हालत मे देख लिया तो उस पर क्या असर होगा ?

सेठ (चौंककर) ओह ! इसका ता मुझ ध्यान ही नही रहा।

नवनीत (धीमे स्वर म) बी बोल्ड, हैव पेशेन्स रमश भी आपकी तरफ ही देख रहा है, प्लीज स्माइल। खिला खिला चेहरा लेकर उसके पास जाइए।

सेठ (सभलते हुए) हा-हा। (रमेश के पास जाता है)

रमेश (दद दबाकर हसता हुआ) ओह ! पिताजी, मौत को डिफीट देने जा रहा हू। (चुटकी बजाकर) अभी गया और अभी आया।

सठ (दुख पर काबू करत हुए) हा, रमेश ! भगवान तुम्हे अमर बनाए। बेटा कोई चिन्ता की बात नही।

रमेश (हसते हुए) चिन्ता ? चिन्ता को तो मैं अभी जलाकर लौटता हू। बस, आप तो विजय माला हाथ म लिय इतजार करना। (चुटकी बजाकर) यह गया (चुटकी बजाकर) यह आया। लो मनेजर साहब आ गये। (मनेजर बाइ ओर से आता है) मनजर साहब ! पिताजी को सभालना। मैं जरा मौत स दो दो हाथ करके जल्दी ही लौट रहा हू। (ऑपरेशन थियेटर का अटेन्डेन्ट आता है। रमेश का स्ट्रेचर आपरेशन थियेटर की ओर चलता है। बाइ ओर मे लज्जा आती है।)

रमेश हलो लज्जा ! अभी जरा तुम्हारी सौत स निपटकर आ रहा हू। (हसकर) उसकी ऐसी चुटिया खीचूगा कि कभी वह इस तरफ मुह भी नही करेगी। (जोर से हसता है लज्जा पाव छूती है ?)

अरे-अरे मेरे पाव क्यो छूती है? सुनो अभी लौटकर आता हू फिर जिन्दगी भर पाव दबाती रहना, समझी? (ठहरकर) ऊहू अरे! इतनी न लजाओ, वरना मौत की तलवार से तो नही मरूगा पर तेरी लज्जा की धार से प्राण निकल जायेंगे। (हसता है फिर धीमे स्वर मे) क्या गरीब के प्राणो की प्यासी हो रही हो? अरे, यह क्या रोनी-सी सूरत बना रखी है? जरा मुस्कराओ कि आसमान हिल जाए, कि बसन्त खिल जाए, प्राणो के पछी के पख खुल जाए। (हसता है। लज्जा भी हल्की-हल्की हसती है) यह-यह-यह, हुई न कोई बात, चलो भाई ओ के लज्जा। (स्ट्रेचर की आवाज) ओ के पिताजी, ओ के मैनेजर साहब। (स्ट्रेचर आपरेशन थियेटर म ले जाता है)

सेठ (दद से) हे भगवान

लज्जा (दुख से) रमेश (रोती है)

मैनेजर (दबे स्वर म) धीरज रखिए सेठ साहब! जरा बहूरानी की ओर देखिए, कितनी हिम्मत रख रही है। अगर आप ऐसा करेंगे तो उस बेचारी का क्या हाल होगा?

सेठ (सभलते हुए) हा-हा! (सेठ और मैनेजर थोडी देर परेशानी से घूमते है। अचानक लज्जा, सेठ, मैनेजर मूर्तियो की तरह फ्रीज हो जाते है मानो समय रुक गया हो थोडी देर बाद तीनो हिलते है) ओह! इतनी देर हो गई आपरेशन का क्या हुआ? रमेश के बारे मे कोई नही बताता। जिससे पूछो बस थियेटर म भागता जाता है। (एक दो अटेन्डेन्ट अन्दर से बहार, बाहर से भीतर आते जाते है) अरे मिस्टर मिस्टर, ओ जरा सुनो तो मेरा रमेश। (अटेन्डेन्ट अनसुनी करके आपरेशन थियेटर म चला जाता है) यह भी चला गया, क्या करू, किससे पूछू?

मैनेजर सेठ साहब, जरा धीरज रखिए। अभी पता लग जायेगा। भगवान् की कृपा से ऑपरेशन सफल होगा, आप चिन्ता न करें। दवा तो हो ही रही है। हम भी भगवान से दुआ मागें।

सेठ (चौंककर ओह, यह तो डाक्टर साहब भी कहते है—(पार्श्व

म डॉक्टर की आवाज गूजती है तीव्र होती जाती है) जनता की दुआए आपक साथ है सठजी जनता आपको देवना चहती है। जनता की दुआए आपक साथ हैं, सठजी जनता आपको दवना चहती है। जनता की दुआए आपक साथ हैं, सठजी, जनता आपको देवता चहती है। (अचानक चीखकर) नही नही (हाफ्त हुए) नही

मनजर (अचानक चौंककर) क्या हुआ, सेठ साहब ? अचानक आप चीख क्यो पडे ?

लज्जा (पास आकर घबराय हुए स्वर म) क्या पिताजी क्या हुआ आपका आप चीखे क्या ?

सठ (हाफते हुए) कुछ नही कुछ नही बस यू ही। ओ ह, भगवान् (अचानक ऑपरेशन थियटर के दरवाजे खुलने की आवाज भागकर पास जाकर हडबडाते हुए) डॉक्टर साहब, मरा रमेश कैसे है ?

नवनीत (चुप रहता है)

सठ (उतावली से) डाक्टर साहब, मरा रमेश

नवनीत (दु ख स) आई एम सारी (डॉक्टर अदर चला जाता है)

लज्जा (चीखकर रोती हुई) नही नही रमेश रमेश (फूट फूट कर रोती है)

सठ हाय रमेश यह तुमने क्या किया बेटा ! अरे मुझे मझधार म डुबा गया रमश।

मनजर (रूआसे स्वरा म) सठ साहब सठ साहब जरा धीरज स काम लीजिए।

लज्जा रमश रमश आपने ता कहा था—लज्जा मैं मैं अभी

सेठ (लज्जा को रोते देखकर) रमेश तेरे बिना तेरे बिना लज्जा का क्या होगा बेटा—लज्जा की लज्जा किसके सहारे बचेगी। रमश रमश रमश मरा बटा ! हाय (रोता है)

मनजर सठ साहब सेठ साहब हिम्मत तो रखिए। देखिए अगर आप यू छोटा दिल करेंगे तो लज्जा बेटी का क्या हागा ? उसका

आपके सिवाय और कौन सहारा है ?

सेठ (जोर से रोता हुआ) लज्जा ! मेरी बेटी ! (लज्जा फूट फूटकर रोती है) लज्जा, चुप हो जा बेटी चुप हो जा, मौत के सामने किसी का वश नही चलता है। अपने भाग्य ही फूटे है तो कोई क्या करे !

लज्जा (रोकर) पिताजी पिताजी यह क्या हो गया यह मेरे भाग्य मे आग कैसे लग गई अब मैं क्या करू ? हाय, मैं कहा जाऊ ?

सेठ नही लज्जा नही रो, मत बेटी रो मत, मुझसे तेरा रोना सहा नही जाता मेरा हृदय फट जायेगा अरे, मैं मर जाऊगा

लज्जा (शा त होकर) नही पिताजी, नही। मैं नही रोती मैं भी आप आप जैसे पिता क होते भला मुझे क्या कमी है नही मैं नही रोऊगी। आप आप अपने को सभाल।

सेठ (जोर से) लज्जा मेरी बेटी लज्जा (फूट-फूटकर रो पडता है)

मनेजर सेठ साहब, जरा सभलिए। देखिए ! लज्जा बेटी की हिम्मत देखिए। आप बच्चो की तरह ऐसे न करे वर्ना बहूरानी का क्या होगा ? अब आप ही उसके सहारे हैं।

सेठ (सभलते हुए) हा हा ठीक कहते हो, ठीक कहते हो

नवनीत (थियेटर से बाहर आकर, सेठ के पास जाकर) सेठ साहब आई एम वेरी सारी ! कि मैं हर कोशिश करके भी कुछ न कर सका। पर पर

सेठ (उतावली से) 'पर' क्या डाक्टर साहब ?

नवनीत (हिचकिचाते से) बात यह है कि खर रहने दीजिए।

सेठ (दु ख से) पहेली न बुझाइए डॉक्टर साहब ! कहिए, आप क्या कहना चाहते है ?

नवनीत बात यह है सेठ साहब, कि मौका तो नही है कि आप लोगो से कुछ पूछू पर अन्य नवयुवको की जान बचाने के लिए यह जरूरी है। अगर आप बुरा न माने तो जनहित मे मैं आप लोगो से कुछ प्रश्न पूछू ?

सेठ (लम्बी सास लेकर) हा, पूछिए डॉक्टर साहब। हाय मैं

चाहता कि जसे मेरे हृदय पर चाव लगा है और किसी बाप के हृदय पर लगे, (सभलकर) पूछिए।

नवनीत सेठ साहब ! रमेश की हमने हर तरह से जाच की पर उसका रोग पकड़ मे नही आया। इसी प्रकार के कई नौजवान मरीज हमारे यहा एडमिट है। जिनके अग-अग सूज गए है या गल गए है या काम नही कर रहे हैं। अगर रमेश के बारे मे पूछने से रोग का कारण हमारी पकड मे आ जाए तो रमेश की मौत सकड़ो की जिन्दगी बचा देगी।

सेठ आह ! पूछिए।

नवनीत (हिचकिचाते हुए) क्या क्या रमेश शराब पीता था ?

सेठ (दुख से) रमेश और शराब ? वो चाय भी नही पीता था। वो तो सिर्फ भगवान का चरणामृत पीया करता था, डॉक्टर साहब !
(रुआसा हो जाता है)

नवनीत अच्छा। अच्छा फिर भी

सेठ 'फिर भी क्या ?

नवनीत क्या वो किसी अन्य मादक द्रव्य का सेवन किया करता था जसे ट्रैंक्यूलाइजर स्लिपिंग पिल्स या भग अफीम

सेठ नही, बिल्कुल नही। वो इतना हसमुख और इतना मस्त था कि उसे इनकी आवश्यकता ही नही पड सकती थी।

नवनीत तो क्या वह कभी स्मोकिंग आई मीन, सिगरेट, चरस, गाजा, सुलफा आदि का

सेठ नही ऐसा वो नही कर सकता था डॉक्टर, वो मेरा बेटा था, मेरा (रुककर) फिर भी लज्जा तुम इसके बारे मे ज्यादा जानती हो तुम बताओ।

लज्जा (आसू पोछकर) ऐसा कहकर उन पर कलक लगाना होगा, पिताजी। वो इतने अच्छे इतने अच्छे (सिसकने लगती है)

नवनीत ओह ! आई एम सॉरी लज्जा रानी ! (सोचते हुए) फिर फिर एक ही कारण और नजर आता है और वह वह आपके यहा लागू नही होता

सेठ वो कारण कौन-सा है, डॉक्टर साहब ?

नवनीत खैर छोडिए वो आपके यहा ऐसा सभव नही

सेठ क्या सभव नही, डाक्टर साहब ?

नवनीत एडल्टेशन। मिलावट (सगीत का गहरा प्रभाव)

सेठ (चौककर) हैं हा हा नही नही (हिचकिचाता है)

नवनीत हा यही तो मैं कहता हू आप जगह जगह आदश खाद्य भण्डार खोलकर जनता का शुद्ध भोजन उपलब्ध करा रहे है, अत आपके यहा तो मिलावटी खाद्य वस्तुए आने का प्रश्न ही नही उठता। आपके यहा ता खाने की वस्तुए 'आदश खाद्य भण्डार' से ही आती हैं।

सेठ इस बारे मे मैनेजर साहब जानें ? वही बताएगे कि खाने का मामान कहा से आता था ?

मैनेजर (हिचकिचाते हुए) वो वा तो अपने ही आदश खाद्य भण्डार से आता था।

सठ (अचानक जोर से चीखकर) किसन कहा कि अपने घर पर खाने का सामान आदश खाद्य भण्डार से लाया करो ? (पागलो सा) किसने कहा किसने कहा ? किसने कहा ? (चीखकर मनेजर का गला पकड लेता है गला दबाता है)

मनेजर (छुडान का प्रयास करता हुआ) अरे मैं मर जाऊगा मेरा गला मेरा गला क्यो दबा रह है ? मैं मर जाऊगा

लज्जा (डरकर) डॉक्टर साहब मैनेजर साहब को बचाइए पिताजी शायद पागल हो गए हैं मैनेजर साहब का गला दबाकर मार डालेंगे।

नवनीत सठ साहब गला छोडिए मैनजर को छाडिए। (जबरदस्ती छुड़वाता है)

मैनजर (हाफता हुआ) डाक्टर साहब, अगर आप नही बचाते तो सेठ साहब मुझे मार डालते।

सेठ (पागल-सा हसता हुआ) आदर्श खाद्य भण्डार आदश खाद्य भण्डार आदश खाद्य भण्डार आदश खाद्य भण्डार (व्यग्य

से) आदश खाद्य भण्डार (जोर स हसता है)

लज्जा पिताजी पिताजी ? यह यह आपको अचानक क्या हा गया • क्या हो गया आपको ? (रोती हुई) मैं मर जाऊगी पिताजी, मैं मर जाऊगी

सेठ (फूट फूटकर रोता हुआ) मैं रमेश को खा गया मैंन रमश को अपन हाथा मार दिया, लज्जा बटी ! मैंने तुझे विधवा कर दिया, अपन हाथा तेरे माग का सिन्दूर पोछ डाला। मैंने तरी जिन्दगी म आग लगा दी, मैंन (जार से रोता है) मैंने मैंन इस बाप न बेटे को मार डाला मैंने रमेश को मार डाला

लज्जा पिताजी पिताजी ऐसा न कहिए आप तो उनको जान स अधिक प्यार करते थे। आप तो देवता है देवता

सेठ (चीखकर) नही, मैं देवता नही, मौत का देवता हू मौत का देवता। मैंने उसे मार डाला मैंने उसे मार डाला मैंने उसे मार डाला (एकदम चीखकर) बद कर दो आदश अन्नपूर्णा खाद्य भडार (बाहर की ओर चल देता है दूर जाते तेज स्वर म) बद कर दो अन्नपूर्णा खाद्य भडार बद कर दो आदश खाद्य भडार

मैंनेजर (पीछे जाते हुए) सेठ साहब सठ साहब सेठ साहब (तेजी से जाता है)

(अटेन्डेन्ड सफेद चद्दर से ढकी रमेश की लाश स्ट्रेचर पर लाकर बाहर खडी कर देता है। लज्जा पास जाकर लाश के मुह से चद्दर उठाकर रोती है।)

लज्जा (रोती हुई) रमेश ! यह आपने क्या किया ? मुझे अकेली किसके सहारे छोड गय ? आपके सिवाय कौन है मेरा ? कितना कितना प्यार करते थे मुझसे

(फ्लेश बक, रमेश की गूजती आवाज मे। लज्जा शून्य म ताकती है)

रमेश (दद से) मैं मैं तुम्ह प्यार दे ही कहा सका ? अभी तो तेरे हाथो की मेहदी भी नही उतरी अभी मैंने तुम्ह जी भरकर देखा ही कहा ? अभी तुमसे प्यार के दो शब्द भी नही बोल सका।

अभी तो अभी तो

(फ्लेश बक समाप्त होता है)

लज्जा (चौककर, सजग होकर इधर उधर देखती है फिर रोती हुई) रमेश रमेश (रोती है। फ्लेश बक। पुन लज्जा शून्य मे ताकती है)

रमेश बन गई ना आसुओ की ढेरी ? अरे लज्जा मुझे चाहिए मुस्कान और हसी का झरना ए स्माईलिग टाय ए लाफिग डाल प्लीज स्माइल वन मोनालिजा स्माइल (हसता है) वन मिलन डालर स्माइल (फ्लेस बैंक समाप्त)

लज्जा (चौंककर) फूट फूटकर रोती है। अब अब मैं किसके लिए मुस्कराऊगी किसके लिए हसूगी, रमेश, रमेश!

(फ्लेश बैंक)

रमेश अरे, ए क्या रोनी सूरत बना रखी है। जरा मुस्कराओ कि आसमान हिल जाए, कि वसत खिल जाए, कि प्राणा के पछी के पख खुल जाए। (हसता है भावुक स्वर से) हसती हो तो जैसे झरना बहता है, रोती हो तो सावन बरसता है। एक क्षण मे ऐसी महक जाती हो जस रात रानी और दूसरे क्षण ऐसी मुरझा जाती हो जस आगघिरी सोनजूही। यू आर रियली वेरी सेंटीमेटल एण्ड इमोशनल डार्लिग

(फ्लेश बक समाप्त, लज्जा का फूट फूटकर रोना)

लज्जा (दहाडमारकर) रमेश (फूट फूटकर रोती है)

(फिर फ्लेश बैंक)

रमेश (दद मे) लज्जा, मेरी मा तो बचपन म ही मर गई, बहन कोई थी नही। अब मुझे तो तुम्ही से प्यार स्नेह सब कुछ मिला है। तुम्ही मेरे तरसते मरुस्थल मे सावन की बौछार बन बरसी हो। तुम्ही अधेरी राहो मे शमा बनकर चमकी हो। तुम्ही

(फ्लेश बैंक जारी)

अभी जरा तुम्हारी सौत से निपट कर आ रहा हू (हसकर) उसकी ऐसी चुटिया खीचूगा कि कभी वह इस तरफ मुह भी नहीं करेगी

(जार स हसता है। फ्लेश बैक समाप्त)

लज्जा (होस म आती सी) तुम तो नही आए पर (रोती हुई) मौत तो आ गई। रमेश, जि दगी भर क लिए आप इस सौत का मेरी छाती पर मूग दलन को छाड गए? ऐसा ऐसा अन्याय क्यों किया मेरे साथ? मुझे भी अपने साथ ले जाते (रोती है) क्या छाड गए मुझे क्या छोड गए? आप मुझ तनहा छोडकर कहा चल गए? मैं किसके सहारे पहाड सा जीवन गुजारूगी किसके सहारे जीऊगी किसने छीन ली मुझसे मेरे प्राणा की धडकन, मेरी आखों की रोशनी किसने (फूट फूटकर रोती है) किसने

(फ्लेश बैक, सेठ की आवाज)

सेठ (रोता हुआ) मैंने रमेश को अपने हाथो मार दिया, लज्जा बेटी, मैंने तुम्हे विधवा कर दिया, अपने हाथो तेरे माग का सिन्दूर पोछ डाला। मेरे पापा ने रमेश को मार डाला (चीखकर) *नही, मैं देवता नही, मैं मौत का देवता हू मौत का देवता*

(फ्लेश बैक समाप्त)

लज्जा (फूट फूटकर रोती है) यह यह आपने क्या किया पिताजी? यह यह महापाप आपने क्या किया पिताजी? क्यो किया क्या किया क्या किया? आपको जमाना देवता कहता है फिर फिर *आप मौत के देवता क्या बने क्यों बने मौत के* देवता? (फूट फूटकर रोती है) *मौत के देवता*

(करुण सगीत के साथ पटाक्षेप)

एक सुलगता घर

पात्र

भरत	नयी पीढी का प्रतीक, मेकअप वेश भूषा सुविधानुसार।
वृद्ध	भारत का प्रतीक गौराग भव्य आकृति, सफेद-लम्बे बाल एव दाढी श्वेत धोती, चोला।
विभिन्न छात्राए	देश की विभिन्न विघटनकारी शक्तियो एव विदेशी ताक्तो के प्रतीक।

(रगमच सज्जा एव निर्देशन के लिए सकेत)

१ श्वेत पर्दे पर विभिन्न दृश्य पूर्वाभ्यास करके ही प्रस्तुत किए जाने चाहिए। नाव-स्टीमर आदि गत्ते या हाडबोड से बनाए जा सकते हैं।

२ युद्ध-लडाई, बन्दूक व बम के धमाके तथा अन्य ध्वनि प्रभाव के लिए टेप रिकाडर का प्रयोग किया जाए।

३ छाया दृश्यो की एकरसता तोडने के लिए श्वेत पर्दे के पीछे के वल्ब के सामने विभिन्न रग के सेलोफिन पपस प्रयोग मे लिये जा सकते है जिससे एकरगी या बहुरगी प्रभाव प्रस्तुत किए जा सकते है, जो नाटक को मनोरजक एव प्रभावशाली बना देंगे।

४ यदि श्वेत पर्दे पर ये विद्युत प्रभाव सभव न हो तो वद्ध पुरुष तथा भरत को दश्य परिवतन पर जड मूर्तियो की तरह स्थिर खडा कर दिया जाए तथा रगमच के दूसरे भाग मे अथवा बीच का पर्दा उठाकर पीछ विभिन्न दश्य सचालित सम्पादित किए जा सक्त हैं।

५ पद सचालन हाव भाव प्रदशन रगमच के आकार प्रकार के अनुकूल कराय जा सकते है।

(पर्दे के पीछे से)

प्रारम्भिक सगीत के बाद—आग की लपटो जसे ध्वनि प्रभाव—इमी के बीच पुरुप की धीमी धीमी चीखें—जो तीव्र होती जाती हैं—मैं सुलग रहा हू मैं सुलग रहा हू मेरा राम रोम सुलग रहा है मैं सुलग हू मेरा रोम रोम सुलग रहा है। मेरा अग-अग सुलग रहा

सुलग रहा हू बचाओ बचाओ (तेज स्वर मे) मुझे बचाओ (और तेज) बचाओ (और तेज) बचाओ (पर्दा खुलता है—पीछे श्वेत पर्दा लगा है उसके आगे एक तरफ भारत के खाके मे वृद्ध पुरुष मूर्ति-सा खड़ा है। श्वेत पर्दे पर समय समय पर छाया दृश्य दिखाए जाएगे)

(दूर से भागकर आते हुए पदचाप और उभरती हुई भरत की आवाज)

भरत कौन है ? कोई चीख रहा है ? कौन पुकार रहा है (सास लेकर) अरे ! यहा तो कोई नजर नही आता ? फिर ये चीखें (इधर-उधर देखता है चौंककर) अरे यह यह कौन है ? (वृद्ध के पास जाता है) बिल्कुल मूर्ति-सा दिखाई दे रहा है—अरे, यह तो भारत के नक्शे मे खड़ा है। (प्रशसा के स्वरो मे) वाह ! कितना प्रभावशाली रूप है ? ये बर्फ से सफेद लबे बाल यह किरणो सी लहराती लबी सफेद दाढी आह कितना गोरा कितना सुदर कितना शात चेहरा, पर (सोचते हुए) पर कितना उदास ! अरे इसकी, सफेद पोशाक जगह-जगह से जली हुई क्यो है ? पता नही यह मूर्ति है या मानव ? (स्वर बदलकर) पर अभी बचाओ बचाओ मैं सुलग रहा हू मैं सुलग रहा हू कौन पुकार रहा था ? (तेज स्वर मे) कौन पुकार रहा था ? (और तेज स्वर मे) कौन सहायता चाह रहा था ? (इधर उधर देखता है)

वृद्ध (गभीर स्वर मे) मैं पुकार रहा था। मुझे सहायता की जरूरत है। (खाके मे निकालकर मच पर आ जाता है) मैं अन्दर-बाहर से सुलग रहा हू मैं ऊपर-नीचे से सुलग रहा हू मैं दाए-बाए से सुलग रहा हू मैं कण-कण जल रहा हू तिल तिल जल रहा हू।

भरत (आश्चर्यमिश्रित भय से) आप आप कौन है ?

वृद्ध (दुखभरी हसी के साथ) नही पहचाना न ? (दुखभरी सास लम्बी छोड़कर) मुझे कोई नही पहचानता। सभी ने मुझे भुला दिया भरत (मच पर घूमता है)

भरत (चौंककर) आप आप मेरा नाम कैसे जानते हैं?

वृद्ध (रहस्यमयी स्वर में) मैं बहुत कुछ जानता हूँ, भरत! मैं सब कुछ जानता हूँ

भरत (घबराता सा) पर पर आप हैं कौन?

वृद्ध तुम्ही पहचानो मैं अपना परिचय नही दूगा।

भरत (सोचकर) क्या आप कोई ऋषि हैं।

वृद्ध नहीं।

भरत (न समझने के भाव से सिर हिलाकर) तो क्या आप कोई महा-मानव हैं?

वृद्ध (रुककर) नहीं।

भरत (घबराता हुआ) तो क्या आप कोई भूत प्रेत हैं?

वृद्ध (फीकी हँसी के साथ) नहीं। (फिर चलने लगता है। भरत पीछे-पीछे जाता है)

भरत (असमंजस से) फिर फिर आप कौन हैं? आप ही बताइए?

वृद्ध मैंने कहा न, मैं नहीं बताऊँगा, तुम खुद ही पहचानो।

भरत (उकताकर) अच्छा बाबा, मत बताओ पर यह तो बताओ कि आप—'मैं सुलग रहा हूँ मैं अन्दर से सुलग रहा हूँ मैं बाहर से सुलग रहा हूँ' ऐसा क्यों चिल्ला रहे थे। 'बचाओ-बचाओ' क्यों पुकार रहे थे।

हू। मेरे चारो तरफ आग ही-आग है (रहस्यमयी वाणी म) और आग तेज सुलगती जा रही है आग समीप आती जा रही है (तेज स्वर म) यह आग यह आग, मुझे जला डालेगी यह आग मुझे (कापने लगता है)

भरत (बीच म ही झुझलाकर) ओहो। पर मुझे तो कही आग दिखाई नही देती? आप ही बताइए कहा है आग?

वृद्ध आग? देखो मेरे पावो के नीचे आग है। मेरे सिर पर आग सुलग रही है। मेरे दाए आग है। मेरे बाए आग है। आग मेरे बाहर सुलग रही है। आग मेरे अन्दर सुलग रही है। बस आग ही आग आग ही आग।

भरत (आक्रोश से) फिर यह आग मुझे क्या दिखाई नही देती?

वृद्ध (दुख भरे स्वर मे) इसलिए कि तुम सब अपने स्वार्थ मे डूबे हो। इसलिए कि (दर्शको की ओर देखते हुए) तुम सब अपने ही सुख दुख मे डूबे हो इसलिए कि तुम सब अपने को ही, अपने को देखते हो, इसलिए कि तुम लोगो की दुनिया अपने तक ही सीमित है। इसलिए तुम्हे यह आग यह आग दिखाई नही देती, अनुभव नही होती।

भरत तो आप ही दिखाइए न कि आग कहा है?

वृद्ध (भरत के पास जाकर दाढी पर हाथ फेरते हुए) अच्छा, आग देखना चाहते हो? तो आओ, तुम्हे आग दिखाऊ मेरे पावो के नीचे सुलगती आग।

(दृश्य परिवर्तन सूचक सगीत, रगमच पर अधेरा, श्वेत पर्दा रोशन होता है, उस पर पानी की लहरें तथा उसम एक तरफ नाव तथा उस पर वायुयान भेदक तोप, दूसरी ओर स्टीमर छाया म दिखाई देता है। स्टीमर की आवाज, थोडी देर बाद रगमच की रोशनी जलती है, छाया दृश्य हल्का हल्का दिखाई देता है ऐसे दृश्यो को भरत तथा वृद्ध को फ्रीज करके रगमच पर घटित होते दिखाए जा सकते है अथवा यथास्थान दोनो विधाओ का प्रयोग किया जा सकता है।)

भरत (आश्चर्य से) अरे, ये बडी बडी जलयाने ? ये बडी बडी तोपें ये इतने मारे हथियार ये सब क्या है ?

वद्ध यही वह आग है जो मुझे सुलगा रही है। मेरे पावो का दहका रही है।

भरत मैं समझ नही पा रहा हू कि यह कैसी आग है ? कहीं लपट भी तो नही दिखाई देती ?

वद्ध यह एसी आग है भरत जा अन्दर ही अन्दर धधक रही है। जिस दिन यह आग भडक जाएगी, मै झुलस जाऊगा हो सकता है, जलकर राख हो जाऊ मेरा सारा घर तहस नहस हो जाए।

भरत आप पहलियो का क्यो बुझा रहे ह ? मुझे साफ साफ बताइये कि यह क्या है ?

वद्ध यह मेरे घर के नीचे बडे बडे लागा न लडाइ के अडडे बना रखे है, भरत ! यहा बडे खतरनाक हथियार जमा कर रहे है। ऐसे हथियार जो पलक झपकते ही सवनाश की आग धधका सकते है। सब कुछ जलाकर राख कर सकत ह भरत, सब कुछ।

भरत (भयभीत स्वर म) आह ! वास्तव मे यह तो बडी खतरनाक आग है। सचमुच ही आपको बहुत बडा खतरा है। अगर आपके पावो के नीचे आग भडक उठी तो आपको तो आपका

वद्ध (दु ख की लम्बी सास छोडकर) मुझे बहुत खतरा है पर भरत बेटा, खतरा यही तक सीमित नही है। अभी ता तुमने मेरे पावो के नीचे की सुलगती आग दखी है आओ तुम्हे मेरी दाइ ओर सुलगन वाली आग दिखाऊ दखो

(रगमच पर अधेरा छा जाना है फिर वायुयान की तेज आवाज—गाले चलने के धमाके—टको की आवाज फिर धमाके जारी रहते है—दिल दहला देन वाली युद्ध की ध्वनिया उभरती है—थोडी देर बाद रगमच पर रोशनी हो जाती है।)

भरत (बहुत डरा हुआ) अरे, यह क्या ? यह तो लडाई हो रही है। आप मुझे यहा क्यो लाये ? मुझे (कापता हुआ-सा) मुझे डर लग

रहा है।

वृद्ध डरो मत भरत ! यह लडाइ नही हो रही है। लडाई का अभ्यास है। यह मेरा पडोसी दूसरे लोगो के भडकाने म आकर मुझसे लडने की तयारी कर रहा है।

भरत (जिज्ञासा म) यह आपसे क्या लडना चाहता है ?

वृद्ध दूसरो के उकसाने स यह गलतफहमी का शिकार हो रहा है। अगर इसने समय से काम नही लिया तो वह आग भडकेगी जिसमे हम दोनो राख हो जाएग और दूसर लोग उस आग म हाथ तपायेंगे हमारी वेवकूफी की हसी उडाएगे, आने वाली पीढिया हमारे पागलपन का मजाक उडाएगी। हो सकता है, हम दोनो लडकर उस आग मे बस राख की ढेरिया मात्र रह जाए

भरत हे भगवान ! आप सच कह रहे हैं। वास्तव मे आप आग से घिरे है। अब मैं अनुभव करने लगा हू कि आप खतरे से घिरे हैं।

वृद्ध अभी खतरे का वास्तविक रूप तुमने देखा ही कहा है ? भरत, देखते चलो। आओ, तुम्हे सिर पर आग दिखाऊ ?

(रगमच पर अधेरा होता है। श्वेत पर्दे पर परेड करते हुए पावो का दृश्य उभरता है। फिर सुनाई देता है) हम तुम, भाई भाई ! हम तुम, भाई भाई ! (रगमच पर रोशनी हो जाती है। पीछे श्वेत पर्दे पर परेड की मुद्रा म स्थिर पावो का दृश्य)

भरत (आश्चय स) यह क्या ? फौजी ही फौजी ? एक तरफ परेड और दूसरी तरफ भाई भाई के नारे। ये दो विरोधी बाते एक साथ कसे ?

वृद्ध (हसकर व्यग्य स) मेरे इस दोस्त की आदत ही कुछ ऐसी है। यह हर समय मेरे सिर पर कच्चे धागे से बधी नगी तलवार की तरह लटका रहता है। पता नही कब यह तलवार टूट जाए और मेरा सिर काट डाले ?

भरत पर इसस आपकी क्या दुश्मनी है ?

वृद्ध (नि श्वास छोडकर) यह तो मैं आज तक नही समझ पाया भरत !

मैंने इसका कभी नुकसान नही किया। सदा इसके सही पक्ष का समर्थन किया पर फिर भी न जाने क्या मेरे पर गिद्ध-दृष्टि लगाए बैठा है? रिश्ते बिगाडे बैठा है। मैं तो हर कोशिश करता हूँ भरत, कि हम अच्छे पड़ोसी की तरह शांति और प्रेम से जी सकें। पर

भरत क्या इसके पास भी खतरनाक हथियार है?

वृद्ध हाँ, इसके पास सर्वनाशी हथियार तो हैं ही, इसके परिवार के सदस्य भी मेरे परिवार से अधिक हैं। इसने मेरे घर की जमीन हड़प रखी है। यह पूर्वजों की खींची-बटवार की रेखा को भी नही मानता। अपनी मर्जी से धरा के नक्शे बनवाता है और मेरी जमीन को दबाना चाहता है।

भरत क्या आपने इसका विरोध नही किया?

वृद्ध विरोध तो किया, भरत बेटा! पर मैं चाहता हूँ कि हम दोनों पड़ोसियों का यह मामला शांति में ही निपट जाए। आपसी बातचीत से ही निपट जाए तो अच्छा है। व्यर्थ खून-खराबा करने से क्या फायदा? अगर हम आपस में लड़ें तो सर्वनाश की आग भड़क उठेगी, हम [illegible] उसमें घी डालेंगे और हम हम उस आग में राख हो जाएँगे।

भरत (घबराकर) अरे राम! वास्तव में आप तो तीनों तरफ से आग से घिरे हैं।

वृद्ध तीनों तरफ से ही नहीं भरत, चारों तरफ से।

भरत (आश्चर्य से) चारों तरफ से?

वृद्ध हाँ चलो [illegible] तरफ [illegible] चलो। ([illegible] फिर आवाजें [illegible])

भरत यह कौन बात रहा है। यह किस गुणावाद कहा जा रहा है?

वृद्ध यह गुण गुणवाद कहा जा रहा है। यह मेरा बड़ा पड़ोसी है भरत, जिसको मैंने इसके बड़े भाई से बचाकर नया जीवन दिया था। इसका बड़ा भाई इसको सदा गुलाम बनाए रखना चाहता था। वह इसका सर्वनाश करना चाहता था। इसके प्राण लेना चाहता था। मैंने अपना नुकसान करके इस अत्याचारी बड़े भाई से अलग घर बसवाया।

भरत (आश्चर्य से) फिर यह आपके खिलाफ नारेबाजी क्यों कर रहा है?

वृद्ध (गहरी निःश्वास लेकर) इसलिए कि यह अपने स्वार्थ के कारण मेरे अहसान को भी भूल गया।

भरत यह आपका अहसान क्यों भूल गया?

वृद्ध दूसरे लोग इसे धर्म के नाम पर उकसा रहे हैं, भरत! यह धर्म के बहकावे में आ रहा है। यदि आश्चर्य की बात नहीं कि धर्म के नाम पर दोनों भाई फिर एक होकर मुझ पर दाएं-बाएं हमला कर दें और मैं दोनों तरफ से आग में घिर जाऊं। हो सकता है इस लड़ाई में मेरे ऊपर वाला पड़ोसी और नीचे वाली शक्तियां भी इनका साथ देने को तैयार हो जाएं। इस प्रकार मेरे चारों तरफ सर्वनाशी अंगारे सुलग रहे हैं और उस आग से मैं फुका जा रहा हूं। मेरा अंग-अंग, मेरा रोम रोम सुलग रहा है

भरत (लम्बी सांस लेकर, दुःख से) आह! अब मैं आपकी हालत को समझ पाया हूं। सचमुच आपके चारों तरफ आग सुलग रही है। आप चारों तरफ से खतरे से घिरे हैं।

वृद्ध (लम्बी सांस लेकर) मैं इन खतरों की बिल्कुल परवाह नहीं करता बेटा भरत! अगर मेरे घर में सर्वनाश की चिताएं नहीं जलतीं? मेरा घर टुकड़ा-टुकड़ा में बंटा नहीं होता। मेरे घरवाले एकजुट होते।

भरत आपके घर में आग? आपका घर टुकड़ा टुकड़ा में बंटा ऐसा क्यों किसलिए? बताइए।

वद्ध यह तो मैंने चारो तरफ की आग की झाकी तुम्हे दिखाई है बेटा भरत ! अब मैं तुम्हे अन्दर की आग दिखाता हू देख

(रगमच पर अधेरा सगीत के साथ दश्य परिवतन, विदेशी सगीत की धुन व आवाज, अधनगी पोशाक म नारी व पुरुष की छायाए)

पुरुष स्वर (नशे मे लडखडाते स्वर म) आओ, खाओ-पीओ—एश करो। यही जिन्दगी है। इसे ही स्वग कहते है डालिंग !

नारी स्वर (नशे मे अलसाया स्वर) पर इसके लिए पसा चाहिए, डियर ! नामा चाहिए।

पुरुष स्वर पसा पसा हम लायेंगे डालिंग

नारी स्वर (नखर से) कहा से लाएगा मन, कैसे लायगा ?

पुरुष स्वर पसा के लिए हम अपने को बच [illegible]—अपना ईमान, [illegible] इज्जत, अपना मजहब बेच देगा। अगर जरूरत पड़ी तो हम अपना घर बच देगा देश बेच दगा हम [illegible] कुछ बेच दगा।

(रगमच पर रोशनी, पीछे का [illegible])

भरत (आश्चय के स्वर मे) य कौन हैं ?

वद्ध (दुख भरे स्वर मे) यह है मेरी [illegible] पश्चिमी सभ्यता के रग म रगकर [illegible] है, जिसके लिए पसा ही परमेश्वर है, पसा [illegible] है, पसा ही [illegible] है। यह इसान से दरिंदा बन [illegible] तस्करी करता है। यह [illegible], [illegible], [illegible] करता है। न इसका कोई पिता है, न [illegible]। आह ! [illegible] सतान के कारण मैं [illegible] हू।

भरत ओह ! वास्तव म [illegible] आपकी सतान

वद्ध मेरी यह सतान [illegible]

को पूछ रहो हैं। दग, जिन्हें मैंने घर को व्यवस्था का काम सौंप रखा है जरा उनकी हालत ‘ख

(रगमच पर अधेरा, श्वेत पर्दे पर दृश्य उभरता है। सामूहिक शोर हल्ला, वठ जाओ, मज थपथपान की आवाजें छायाए उभरती है)

छाया एक (मुक्का तान) वाणी की स्वतत्रता मेरा मूल अधिकार है, आप बहुमत के कारण मेरी आत्मा की आवाज का कुचल नही सकत। मैं आपका पर्दाफाश करके रहूगा। मैं

छाया दूसरी (बीच म ही, हवा म हाथ लहरा-लहराकर) अरे दलबन्नू। पहल अपन काले-कारनामा पर तो पर्दा डाल ल, चोर कही के

छाया एक (दोना हाथ उठाकर) यह व्यक्तिगत आराप है, यह सज्जना की भाषा नही। अपन शब्द वापस लो।

छाया दूसरी नही लूगा—चोर, चार, चार, हजार बार चार। (हा हल्ला 'मारो-मारा छायाए परस्पर लडती हैं, कपड़े फाडती हैं बाल नोचती हैं, जूत उछालती हैं मुह पर थूकती हैं व दूब चलाती हैं तोड-फोड की आवाजें, काच टूटने की आवाजें, बीच-बीच म 'आडर-आडर' की आवाजें उभरती हैं, दवती रहती हैं फिर रगमच रोशन होता है। पीछे के दश्य मिट जात हैं)

वद्ध (आह भरकर) यह है हाल उनका जो घर की व्यवस्था करते हैं (दुख से) यह आग यह आग मुझ खाक कर दगी भरत ! मुझे मिटा डालगी।

भरत (दुख से) आह इस घर की हालत बहुत ही खराब है।

वद्ध अभी क्या हुआ है भरत ! इस आग की लपटा को भी देख (रगमच पर अधेरा, दो मोटरा की एक के बाद दूसरे की रुकन की आवाज, श्वेत पर्दे पर दा पुरुष छायाए विपरीत दिशाओ स आती हैं। पास आकर)

एक स्वर ले आए ?

दूसरा स्वर हा, सभालो यह ब्रीफकेस और अपना ब्रीफकेस मुझे दो। इसमे बो है ना ? (ब्रीफकेस परस्पर बदलते है)

एक स्वर हा, जिसका वायदा किया था। वह सब इसम है।

दूसरा स्वर ओ के

(दोनो कारा न दरवाजे वद होने की आवाजें कार जान की आवाज, रगमच रोशन होता है)

भरत (आश्चय से) ये य कौन थे ?

वद्ध (दुख से) उसमे से एक वह है, जिसे मैंने घर का प्रशासन सभलाया हुआ है। दूसरा वाहर का आदमी है।

भरत इनके ब्रीफकेसो मे क्या था ?

वद्ध वाहर वाले के ब्रीफकेस म है रुपय आर विदेशी शराव की चार बोतलें

भरत (आश्चय से) विदेशी शराब की वोतलें और दूसरे के ब्रीफकेश म ?

वद्ध (दुख से) दूसरे के ब्रीम्केम म मर घर के ऐसे गुप्त कागजात जा पडोसी के हाथो म पडने से मेरे घर का सवनाश हो सकता है।

भरत (दुख से) ओह ! रुपये और शराव की चार वातला के पीछे घर के गुप्त कागजात बेच दिए इहोन ?

वद्ध (दद से) इही हरक्तो से ही तो मैं अदर-ही अदर सुलग रहा हू, दहक रहा हू। मेरी सतान अपने स्वाथ से कितनी नमकहराम हो रही है।

भरत ओह ! ऐसे हालात मे तो सवनाश निश्चित है।

वृद्ध सवनाश का एक कारण हो तो कोई इलाज करु। इस घर म जिसे जो काम सौंपा उसी ने घर की नीवें खोदना शुरु कर दिया। आज इस घर की सभी नीवें हिल रही है जरा यह भी दखा

(रगमच पर अधेरा छाता है। भरत तथा वृद्ध आमन-सामने फ्रीज स्थिति म खडे है उनके बीच श्वेत पर्दे पर सतुलित तराजू का दृश्य उभरता है। (यदि सभव हो तो न्याय की प्रतीक, आखो पर पट्टी वधी नारी-मूर्ति, तराजू

पकड) एक तरफ स एक पुरुष छाया आकर एक पलड म धन (सिक्के) डालता है। दूसरी तरफ स दूसरी छाया (स्त्री हो सकती है) आकर पहल वाली छाया से अधिक सिक्के डालती है। (झनकार सुनाई दती है) तराजू का पलडा उस तरफ झुक जाता है फिर क्रमश दोनो छायाए अधिक और अधिक सिक्के डालती रहती हैं और तराजू के पलडे इधर-उधर झुकते चले जाते है। दिखाने का भाव है 'बढे सो पावे । पलडे पूर्णतया असतुलित हो जाते हैं। पीछे से अवाजें उभरती हैं हम न्याय चाहिए, हम इन्साफ चाहिए, हम हमारा हक चाहिए हमे हमारे अधिकार चाहिए, हम स्वतन्त्रता चाहिए हम (आवाजें तेज होती है। तीव्रतम झटके स) पाश्व की रोशनी बुझती है रग मच रोशन होता है, थोडी देर वद्ध व भरत फ्रीज स्थिति म खडे रहते है मानो पत्थर की मूर्तिया हो फिर वृद्ध हरकत में आकर भरत को छूता है। भरत हरकत म आता है)

भरत (आश्चय म) यह क्या था ? इस तराजू म क्या बेचा जा रहा था ?

वृद्ध (गहरी आह भरकर) यह मरे घर के न्याय की स्थिति थी। इस तराजू पर याय बिक रहा था, इन्सानियत बिक रही थी।

भरत कौन बेच रहा था ?

वद्ध मेरे घर के वे बेटे, जिन्हें मैंने यह धम का काम सौंपा था।

भरत ओह ! ये ऐसा क्या कर रहे है ?

वद्ध अपने व्यक्तिगत सुखो के लिए स्वय के लिए (दद से) और मेरे इन बेटो के कारण मेरे घर की इज्जत धूल मे मिल रही है। सारा घर हिंसा, रक्तपात अन्याय अत्याचार का अड्डा बन रहा है। हिंसा की इस आग म मेरा रोम रोम सुलग रहा है। मै जल रहा हू मैं झुलस रहा हू मैं राख हो रहा हू

भरत (दुख से) वास्तव मे आपके घर की हालत बहुत ही खराब है। लगता है, यह घर उजड जाएगा।

वृद्ध (दद से) और किसी का इसकी चिन्ता नही। अपनी-अपनी ढपली अपना-अपना राग गा रहे हैं। सभी अपना-अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं और मैं मैं इस आग मे जल रहा हू।

भरत (दु ख मे) सच है जिस घर की यह हालत हो तो उस घर का मालिक सुखी नही रह सकता

वृद्ध (दु ख से) हा बेटा अभी तो देखते जाओ भरत! मैंने बेटा से कहा कि मिल जुलकर रहो। एकता की डोर से बधे रहो। घर पर खतरा है पर वे अपने स्वार्थो के लिए घर पर घिरे खतरा को भूलकर एक दूसरो से (रगमच पर अधेरा, श्वेत पर्दे पर छाया दृश्य उभरता है।)

एक छाया मुझे अधिकार और सुविधाए मिलनी चाहिए। मुझे दूसरो से सीधा व्यापार करने का हक दिया जाए।

दूसरी छाया मुझे ज्यादा आजादी दी जाए। ज्यादा स्वायत्तता दी जाए।

तीसरी छाया अगर तुम अपना ही अपना सोचोगे तो इस घर का क्या होगा? इसमे सभी भाइयो का अधिकार बराबर है—छोटे का, बडे का।

एक छाया अगर मुझे अधिक अधिकार नही दिए तो म घर से जुदा हो जाऊगा। सारे रिश्ते-नाते तोड दूगा। अपना घर अलग करके उस पर अपना झडा फहराऊगा।

दूसरी छाया मुझे अधिक स्वायत्तता नही दी तो म अलग म घर बसा लूगा—सबका साथ छोड दूगा। अपनी आमदनी अपने उत्पादन मे किसी का हिस्सा नही रखूगा। अपने कमरे के नल से किसी का जल नहीं दूगा। अपने कमरे म स दूसरे कमरे म बिजली नही जाने दूगा। पूरी तरह जुदा हो जाऊगा।

तीसरी छाया (गम्भीर स्वर मे) घर स जुदा होने से हमारे इस घर को नुकसान होगा ही। यह तो कमजोर होगा ही। पर अलग

होकर तुम भी सुख से नही रह सकोगे। उन्नति नही कर सकोगे। समझ लो, शरीर स कटकर अलग हुआ अग कभी सुरक्षित नही रहता। उसे आवश्यक खून नही मिलता। कोई दूसरा अग उसकी रक्षा नही करता तो फिर वह अग नष्ट नही हो जाएगा ?

एक छाया (मागपूण स्वर) मैं कुछ नही जानता मुझे ज्यादा अधिकार दो!

दूसरी छाया मुझे सबसे अधिक धन दो।

एक छाया मुझे सबसे अधिक सुविधाए दो।

दूसरी छाया मुझे ज्यादा स्वतत्रता दो मुझे अधिक स्वायत्तता दो।

एक छाया पहले मुझे अपना हक लेने दो, तुम चुप रहो।

दूसरी छाया (तेज स्वर म) तुम चुप रहो, पहले मैं अधिकार लूगा

एक छाया मैं लूगा

दूसरी छाया (चीखकर) नहीं, मैं लूगा

एक छाया (थप्पड मारते हुए) यह लो

दूसरी छाया (घूसे मारते हुए) अच्छा, तो सभाल

(लडने की आवाजें तोडफोड, आग आदि के ध्वनि प्रभाव, रगमच रोशन होता है। पीछे के दृश्य मिट जाते है।)

वृद्ध (आह भरकर) यह है मेरे परिवार की हालत! हर सदस्य अधिक-से-अधिक अधिकार और स्वायत्तता चाहता है चाहे यह घर नष्ट क्या न हो जाए? (दुख से) हाय, यह आग मुझे खा जाएगी। यह आग मुझे लील जाएगी।

भरत आह! कितन बेवकूफ है इस घर के लाग जो अपन ही हाथो अपने सवनाश की आग भडका रहे है। ऐसे लाग

वद्ध एमे लोग ही नही, भरत! इन लोगो का भी देख

(रगमच पर अधेरा। श्वेत पर्दे पर दश्य उभरते है। एक आदमी के हाथ मे सूअर का कटा सिर है, दूसरे के हाथ मे गाय का सिर)

एक छाया (चीखकर) चुप अगर मेरे धम को बुरा कहा तो मैं तेरी जीभ खींच लूगा। तुम्हारा धम

दूसरी छाया (तेज स्वर म) खामोश अगर मरे मजहब क खिलाफ एक लफ्ज बोला, तो तरी खाल खींच डालूगा।

एक छाया तेरा धर्म पापापथी है।

दूसरी छाया तेरा मजहब अधापथी है।

एक छाया तू म्लेच्छ मेरे धम को बुरा कहता है, मैं तेरी नाक काट डालूगा।

दूसरी छाया अबे ओ काफिर! मेरे मजहब का नाम भी जुबा पर लाया तो गदन काट फेंकूगा।

एक छाया तो ले, सभाल अपनी नाक (मारता है)

दूसरी छाया तो तू भी सभाल अपनी गदन (मारता है)

एक छाया (पुकारकर) चले आओ साथियो—एक भी म्लेच्छ बचने न पाए। (छायाए उभरती हैं, लाठिया, भाले तलवारें चलती हैं)

दूसरी छाया आगे बढो दोस्तो! कत्ल ए-आम मचा दो। काफिरों का बच्चा तक न बच पाए। (कई छायाए आती है बदूकों के धमाके। बम विस्फोट का तेज धमाका। धुआ फिर रगमच रोशन होता है। श्वेत पर्दे के दृश्य लोप)

भरत (डरकर दु ख से) ओह! ये पागल तो धर्म के नाम पर खून बहा रहे है। कितने दीवाने हैं? ये घर पर मडराते खतरों से अनजान आपस म लडकर अपने घर को भुला रहे हैं। वास्तव म आपका अग-अग रोम-रोम सुलग रहा है।

वृद्ध (दु ख स कराहकर) ओह! यही आग तो मुझे भस्म किए जा रही है भरत! (गहरी सास लेकर) अब मेरे नौजवान बेटे क रूप भी देख (पीछे मे स्वर सुनाई देता है। वृद्ध व भरत दोनो सुनते है)

स्वर मैं क्या करू प्रेम इस घर से? क्या दिया है इस घर ने

मुझे? बेकार की डिग्रियां, गरीबी, बेकारी, अपमान, एवं अन्धकार मय भविष्य फूंका आग। मैं आग लगा दूंगा। इस घर को फूंक डालूंगा इस घर को। ईंट-से ईंट बजा दूंगा इस घर की। मुझे इस घर से कोई प्यार नहीं। (चीखकर) कोई सहानुभूति नहीं। मेरा कोई रिश्ता नाता नहीं इस घर से। आग लगने दो इस घर को (स्वर धीमा हो जाता है)

भरत (दुःख से) आह! आपका नौजवान तो बहुत ही खतरनाक लगता है। इस घर से कोई प्रेम नहीं। यह तो घर को आग लगाने को कहता है।

वृद्ध और इसी आग से मैं धधक रहा हूं, भरत! मेरा रोम रोम जल रहा है। जरा इधर देख, यह सुन (भरत को बिल्कुल विंग के पास ले जाता है। खुद घूमकर रंगमंच के बीच में आ जाता है। पीछे से तेज खर्राटों की आवाज।

भरत (आश्चर्य से) जब चारों तरफ आग लग रही है तो यह खर्राटे कौन भर रहा है?

वृद्ध (बहुत ही दुःख से) मेरे घर के लोग।

भरत आह! जब घर के लोग खर्राटे भर रहे हैं, तो फिर आग से घिरे इस घर को कौन बचाएगा? कौन बचाएगा?

वृद्ध बस, सबसे तेज आग मेरी नस नस को फूंक डालने वाली यही आग है। यह आग मुझे जिन्दा नहीं रहने देगी। (रुककर लम्बी आह भरकर) यह आग मुझे स्वाहा कर देगी। (हांफते हुए) अब तो तुमने देख ली, मेरे बाहर की आग को? (चलकर भरत के पास जाता है) मेरे अन्दर की आग को? आग ही आग को? बस आग ही-आग अब अब तुम समझ गए मेरे दुःख दर्द को? मेरी आग को? मेरे हाल को? (एक क्षण के लिए अंधेरा होता है। रोशनी होने पर रंगमंच के बीच केवल भरत खड़ा है।) आश्चर्य से) अरे आप कहां चले गए? कहां अदृश्य हो गए? (चारों तरफ ढूंढता है) कहां है आप? (पुकारकर) आप कहां हो? (रुककर) कहां छिप गए?

वद्ध (पार्श्व म, गहराई से गूजती आवाज) म तुम्हारे शरीर म तुम्हारी आत्मा म तुम्हारी सासा म तुम्हारे खून मे, तुम्हारे विचारा मे, तुम्हारी बुद्धि मे, घुल मिल गया हू।

भरत (चीखकर) क्या?

वद्ध (गहराई स गूजती आवाज) इसलिए भरत, कि तुम्ही इस घर के कल क मालिक हो। कल का यह घर तुम्हारा है। कल का भविष्य तुम्हारा है। इसीलिए मैंने तुम्ह चारा तरफ धधकती आग स परिचित कराया। सभालो अपना घर! सवारो अपना भविष्य (स्वर धीमे होते जाते है) बचाओ अपने घर को (और धीमा स्वर) अदर की आग मे (और धीमा स्वर) बाहर की आग से (बहुत धीमे स्वर म) चारो तरफ की आग से

(सगीत के साथ पटाक्षेप)

वो आ रहा है ?

पात्र

१	मोहन	पागल।
२	राजेश	मानसिक चिकित्सक।
३	इला	मानसिक चिकित्सक।
४	रमा	मोहन की पत्नी।
५	विमला	नर्स।

(अस्पताल का कमरा, बीच म एक मेज, पास म चारा तरफ कुसिया लगी हैं। सामने दो कुसिया हैं। दाहिनी ओर का दरवाजा अस्पताल के अन्दर जाता है तया बाइ ओर का बाहर। सामने कुर्सी पर डॉक्टर राजेश और लेडी डाक्टर इला बैठे हैं। डाक्टर राजेश कुछ कागजात देख रहे हैं तया डॉक्टर इला कुछ सोच रही है।

पाश्व से पागल मोहन की आवाजें सुनाई दे रही है—वो वो वो वो आ रहा है वो बहुत भारी है वो मुझे दबा देगा मैं उसका बोझ नही सह सकता वो मुझे कुचल डालेगा (रोते हुए) वो मुझे मार डालेगा वो मुझे मार डालेगा वो मुझे मार डालेगा (रोता है। थोडी देर बाद अट्टहास करता है) वो आ रहा है। वो आ रहा है—आहा वो आ रहा है—आहा वो आ रहा है (तालिया बजाता है) वो आ रहा है।

डॉक्टर राजेश तथा इला इन आवाजो को ध्यान से सुनते है, समझने की कोशिश करते है। उनके चेहरे पर कभी आशा, कभी निराशा के भाव झलकते है।)

राजेश (लम्बी सास छोडकर) डॉक्टर इला! क्या आप इस मोहन के केस को कुछ समझ सकी है? मेरी समझ म तो अभी तक कुछ भी नही आया।

इला मैं भी अभी तक नही समझ पायी कि यह 'वो' कौन है? उससे इस मोहन का क्या सम्बन्ध है? यह उस 'वो' से इतना म भयभीत है? यह अज्ञात भय क्या है?

राजेश (खडा होकर) सिफ भयभीत ही तो नही है, डॉक्टर इला

माहन उस वो से डरता है, कभी उसी वो से बडा प्रसन्न होकर हसता है। (घूमना शुरू करता है) कभी माहन उस वो स बहुत ही नाराज हो जाता है। य कई प्रकार के विरोधी भाव हम केस की तह तक नही जान दत।

इला विलकुल सही है, डॉक्टर राजेश ! मैं उसस कइ बार बात कर चुकी हू। हर तरह से पूछ चुकी, पर कभी एक निष्कप पर नही पहुच सकी डॉक्टर राजेश कि वो कौन है ?

राजेश यही स्थिति मरी है डाक्टर इला कभी कभी लगता है ! मैंन उसके वो का ठीक निदान कर लिया है परन्तु उससे दुबारा बात करते ही फिर विचार वदलना पडता है।

इला इसी प्रकार मैं भी कई बार विचार वदल चुकी हू। पता ही नही लगता कि इसके पागलपन का वास्तविक कारण क्या है ?

राजेश वास्तविक कारण का कभी-न-कभी तो पता लगगा ही डाक्टर इला !

इला कभी-कभी तो इस केस से इतना घबरा जाती हू राजेश, कि इस लाइलाज घोषित कर दू। (उठकर घूमन लगती है)

राजेश डाक्टर इला, हर डाक्टर के जीवन में ऐसे नाजुक पल आते हैं, जब वह हिम्मत हार जाता है। आगे का रास्ता विलकुल बन्द नजर आता है। अन्धेरा-ही अन्धेरा पर डॉक्टर इला हिम्मत हारना डॉक्टर का काम नही। दुनिया मे ऐसी कौन सी समस्या है जिसका समाधान नही होता। हो सकता है इसके लिए हम कठोर परिश्रम करना पडे, काई नयी राह अपनानी पडे आम रास्त स हटकर कोई नया प्रयोग करना पडे।

इला यह ता आप सच कहत है। पर हमने क्या क्या प्रयत्न नही कर देखे ? पर मोहन के रोग का कारण पकड म नही आया। कभी कभी तो मुझे भी लगने लगता है कि इस जगत, और विज्ञान जगत से भी परे कोई जगत है राजेश ! जिसम भूत प्रेत आदि रहते हैं। इन्ही भूत प्रेतो मे से कोई इस मोहन पर चढा हुआ है, जिसका इलाज शायद विज्ञान के हाथ मे नही है।

(कुर्सी पर बैठ जाती है)

राजेश (हसकर) वाह डॉक्टर इला ! क्या बात कही है आपने ? यह तो हथियार डालने वाली बातें हैं। जब आदमी हार जाता है तो उसे अपनी इज्जत बचाने के लिए कोई बहाना चाहिए और आपने अपनी इज्जत बचाने के लिए ही बहुत सुदर बहाना ढूढ निकाला है। बहुत अच्छे ! (हसता हुआ) हिप हिप हुर्रे हिप हिप हुर्रे डॉक्टर इला, हिप हिप हुर्रे ! (इला के पास आता है)

इला (हसती हुई) आप चाहें तो मेरी मजाक उडा लीजिये, डॉक्टर राजेश ! पर मैं गम्भीरता से कहती हू कि जब मैं मोहन के हाव-भाव और उसकी प्रतिक्रियाओं को देखती हू, उसके रोने-हसने, उछलने-कूदने को देखती हू, उसके भयानक चेहरे को देखती हू तो मुझे भय लगने लगता है कि उसका वो कोई और नही शायद भूत ही हो। (डर से हल्की-सी काप जाती है)

राजेश (हसकर) नही, डॉक्टर इला ! यह आपका भ्रम है। मोहन का वो कोई भूत नही है। निश्चय ही उसका वो उसके जीवन पर प्रभाव डालने वाला कोई व्यक्ति या घटना है।(घूमने लगता है)

इला (असमजस मे) फिर ऐसा व्यक्ति कौन है ? ऐसी घटना क्या हो सकती है ? वो कौन है जिसने मोहन को पागल बना दिया ? हमने सभी सम्भव तरीके से तो पता लगा लिया पर कोई ऐसा व्यक्ति नजर नही आया जो मोहन का वो हो।

राजेश उस वो का हम पता लाकर ही रहेगे, डॉक्टर इला ! हमे मोहन से सम्बन्धित लोगो से फिर से पूछताछ करनी पडेगी। सम्भव है कि उस वो का कोई सूत्र मिल जाय।

इला (अचानक याद करके) अरे हा, मैं तो भूल गई डाक्टर राजेश कि आज मैंने मोहन की पत्नी को बुलवाया है ताकि हम उसके हर परिस्थिति और उसके वातावरण का एक बार फिर नये सिरे से जायजा ले सकें। शायद वह आ ही गई हो ! (पुकारकर) विमला ! विमला !!

(सिस्टर विमला का बाहर से आता स्वर)

विमला आई, डाक्टर साहब ! (अन्दर आकर) जी, डॉक्टर साहब !
इला सिस्टर विमला, क्या मोहन की पत्नी आ गई ?
विमला जी मोहन की पत्नी को आये काफी देर हो गई। वह कई बार कह चुकी कि ज्यादा देर बैठ नही सकती।
इला (हल्के आक्रोश से) क्या ऐसी क्या जल्दी है ?
विमला जल्दी नही है डॉक्टर साहब वह गर्भवती है।
राजेश ओह ! विमला सिस्टर, तो तुमने उन्हे आने क्यों नही दिया ?
विमला जी, आप मोहन के बारे मे बातचीत कर रहे थे, इसलिए मैंने उसे अन्दर नही आने दिया।
राजेश जाओ सिस्टर, उन्हे जल्दी अन्दर भेज दो।
विमला जी, अभी भेजती हू। (जाने लगती है)
इला सुनो, विमला ! जब तक हम मोहन की पत्नी से बात करें, किसी को अन्दर न आने देना।
विमला (जाते हुए) जी डाक्टर साहब !
राजेश अरे, सुनो तो सही (रुक जाती है) देखो अगर मोहन का कोई मित्र आये तो उन्हे रोक लेना। (हसते हुए) न अन्दर आने देना, न बाहर जाने देना।

(राजेश, इला विमला हसते हैं)

विमला (हसते हुए) जी बाधके रखूगी सभीको। अच्छा, तो अब जाऊ ?
इला हा, जाओ। मोहन की पत्नीको शीघ्र भेज दो। (डाक्टर राजेश व इला घूमते है)

(पार्श्व से मोहन की आवाजें वो वो वोआ रहा है। वो आ रहा है वो मुझे मार डालेगा। वो मेरी जान ले लेगा मैं मर जाऊगा—(फूट फूटकर रोता है) वो वो मुझे खा जायगा (धीरे धी आती हैं मोहन

रमा (प्रवेश करते हुए) नमस्ते डा
इला नमस्ते ! आइये इस
जाती है) आपका नाम ?

रमा मरा नाम रमा है।

राजेश देखिये रमाजी, हम आपके पति का इलाज कर रहे हैं। पता नही आपके पति किस वा स हर पल भयभीत रहते हैं। क्या आप बता सकती हैं कि वो कौन है ?

इला और वे उस वो से इतने क्यों डरते हैं ?

रमा (दु ख मे) जी मैं उस वो के बारे मे कुछ भी नही जानती। पता नही वा कौन सत्यानाशी है जिसने मेरा जीवन बरबाद कर दिया ? (दद स) डाक्टर साहब, ये ठीक तो हो जाएंगे न ?

राजेश रमाजी हम पूरी परी कोशिश कर रहे हैं, पर

रमा (उतावली से) 'पर' क्या डाक्टर साहब ?

इला पर जब तक मोहन के उस वो का पता नही लगेगा तब तक हम कुछ भी नही कर सकत।

रमा (दु ख से) डॉक्टर साहब, अगर यह ठीक नहीं हुए ता मैं कही की न रहूगी। इनके सिवाय ससार म मरा कोई नही है फिर इतना बडा परिवार। हम भूखे मर जाएगे। (रोने लगती है)

राजेश (सहानुभूति से) हम आपके दु ख का अच्छी तरह समझ रहे हैं, रमाजी ! पर क्या करें ? हमारी भी तो कुछ मजबूरिया है। जब तक उस वो का पता नही चलता, तब तक

रमा (बीच म ही) तो जल्दी पता लगाइय ना, डॉक्टर साहब ! आप नहीं जानते मर और मेरे परिवार पर क्या गुजर रही है। (रोती हुई) घर का चूला तक जलना, ब द हो रहा है। परिवार की गाडी चलानी मुश्किल हो गई है। मैं अकेली क्या क्या करू ? (सुबकती है। डाक्टर राजेश व इला के चेहरे पर महानुभूति के भाव उभरत हैं।)

इला (रमा के कधे पर हाथ रखकर सहानुभूति पूण स्वर मे) धीरज रखिये, रमा बहन। भगवान सब भला करेंगे। आप तो हमारे प्रश्ना के सही-सही उत्तर दीजिए ताकि हम रोग की जड तक पहुच सकें।

(डॉ० राजेश व इला पास आकर खड हो जाते हैं)

बार बार माग कर रहा हो ?

रमा वैसे तो डॉक्टर साहब मध्यम वग का जीवन ही कज की काली छाया तले गुजरता है, पर इतना कज नही था कि चिन्ता से उनका यह हाल हो जाय।

इला ओह ! अच्छा यह बताओ, रमा बहन ! उन पर यह पागलपन का दौरा क्या अचानक पड गया था ?

रमा जी नही, यह कई दिना से उदास रहने लगे। हर समय खोये-खोये, डूबे-डूबे। बहुत ही दु खी। जैसे किसी भारी बोझ के नीचे दबे हा।

राजेश तो क्या आपने कभी उनसे इसका कारण नही पूछा ?

रमा कई बार पूछा, पर वह टाल गये। फिर वह दिनो दिन अधिक गुमसुम रहने लग। फिर बहुत ही कम बोलना शुरू कर दिया। एक बात कई बार पूछते, तब जाकर छोटा सा जवाब देते।

इला फिर उन पर यह दौरा कैस पडा ?

रमा यह रात को घर लौटे—मेरी तरफ अजीब नजर से घूरकर देखने लगे। देखते ही गये। मैं घबरा गई।

इला माफ करना रमा बहन, एक बहुत ही नाजुक प्रश्न पूछ रही हू—क्या क्या उन्हे तुम्हारे चरित्र पर तो सदेह नही था ?

रमा (दु खभरी विश्वास के साथ) नही डाक्टर सहाब। अब मेरे चरित्र पर क्या सदेह करते ? ऐसी कोई बात नही थी।

राजेश हा, तो उनको घूरते देखकर आप घबराइ फिर क्या हुआ ?

रमा फिर वे अचानक चीख पडे।

(पाश्व से मोहन की तेज आवाज वो वो वो आ रहा है वो मुझे मार डालेगा वो बहुत भारी ह। वो बहुत भारी ह मैं उसका बोझ नही सह सकता (रोता हुआ सा) नही सह सकता नही सह सकता)

रमा (रोती हुई) बस इसी तरह चीखन चिल्लाने लगे बहुत पूछा बहुत समझाया पर नही माने। मुझे देखते और चिल्लाते, मुझे देखें और चीखें, और अब तक यही रट लगाये हुए हैं (रोती हुई)

रमा जी पूछिय

राजेश आपके पति का मिजाज कसा था ?

रमा (दद स) व बडे ही हसमुख थे।

इला क्या वह डरपोक स्वभाव के थ ?

रमा जी नही वे काफी साहसी थ।

राजेश क्या उनका कोई दुश्मन है रमाजी ?

रमा जहा तक मैं जानती हूँ वह इतने अच्छे और नम्र स्वभाव के थे, कि उनका कोई दुश्मन होना मुश्किल है।

इला क्या उनका कभी किसी से झगडा हुआ था ?

रमा जी नही जिस व्यक्ति को अपने जीवन की समस्याए सुलझाने से ही फुरसत न मिले, भला वह दूसरा से लडने-झगडने को कहा से समय निकालेगा ?

राजेश ओह ! क्या आपका पारिवारिक जीवन सुखी था ?

रमा जी, जैसा मध्यम वग के आम लोगों का होता है वसा ही हमारा पारिवारिक जीवन था न सुखी था न दुखी।

इला क्या आप क और उनके बीच अनबन थी या कभी लडाई होती थी ?

रमा यू तो एक जिल्द म बधे पुस्तक के पृष्ठ भी आपस म टकराते हैं आवाजें करते है पर अनबन जैसी कोई बात नही थी।

इला अच्छा, एक बात बताओ, रमा बहन ! क्या व किसी और से तो प्यार नही करते थे ?

रमा (दु ख स) डॉक्टर साहब ! जो व्यक्ति सुबह स देर रात तक कोल्हू क बल की तरह काम करके भी परिवार का पट न पाल सक वह प्रेम क लिय कहा से समय लायेगा और कहा स पसे लायगा ?

राजेश आह, सॉरी अच्छा यह बताइय रमाजी क्या वे कभी अचानक किसी कारण स डरे थे ?

रमा जी ? मुझ तो याद नही कि वह कभी डरे हो।

राजेश क्या उन पर किसी का कज था, जिसे चुकाने क

इला (निराशा से) मुझे लगता है, हम उस वो का शायद पता नही लगा पायेंगे इसलिए मेरी राय म ता इस केस को अब ला-इलाज ही घोषित कर दिया जाय।

राजेश बात तो आपकी ठीक है, डॉक्टर इला 'पर मैं एक बार मोहन की जाच और करना चाहूगा। बुलवाओ।

इला अच्छा ! (पुकारकर) विमला ! सिस्टर विमला !!

विमला (बाहर से आती हुई) जी, आई डाक्टर साहब (आकर) जी, डॉक्टर सहाब !

राजेश अन्दर जाकर कहो कि मोहन को यहा ले आये।

विमला जी, डॉक्टर साहब ! अभी कहती हू।

इला राजेश आप उसे बुलाते तो है, अगर वह कही हिंसक हो उठा तो ?

राजेश (हसकर) नही डाक्टर इला ! वह अपन ही किसी गहरे गम मे और अनात भय मे इतना डूबा है कि वह हिंसक नही हो सकता।

(पार्श्व से मोहन की आवाजें समीप आती हुई वो वो वो वो वो आ रहा है वो मुझे खा जाएगा। वो मुझे खा जायेगा। वो वो वो)

इला लो, वो आ गया।

(फटेहाल दाढी-बाल बढे, मला-कुचला, भयभीत मोहन का प्रवेश)

राजेश मोहन, मेरी तरफ देखो ! मोहन इधर मेरी ओर हा, मुझे बताओ वो कौन है ?

मोहन (मोहन शून्य मे ताकता रहता है फिर चीखकर) वो वो बहुत भारी है पहाड से भी भारी मैं उसके बोझ से पिस जाऊगा। मैं उसके बोझ से मर जाऊगा। मैं मैं उसका बोझ नही सह सकता। मैं उसका बोझ नही सह सकता।(रोने लगता है) नही सह सकता, नही सह सकता। नही सह सकता। (मुह हाथो से छिपा लेता है)

इला (स्नेह भरे स्वर मे) हम तुम्हें उसके बोझ से नही दबने देंगे,

इला (निराशा से) मुझे लगता है, हम उस वो का शायद पता नहीं लगा पायेंगे इसलिए मेरी राय मे तो इस केस को अब ला-इलाज ही घोषित कर दिया जाय।

राजेश बात तो आपकी ठीक है, डॉक्टर इला ! पर मैं एक बार मोहन की जाच और करना चाहूगा। बुलवाओ।

इला अच्छा ! (पुकारकर) विमला ! सिस्टर विमला !!

विमला (बाहर से आती हुई) जी, आई डाक्टर साहब (आकर) जी, डाक्टर सहाब !

राजेश अन्दर जाकर कहो कि मोहन को यहा ले आये।

विमला जी, डॉक्टर साहब ! अभी कहती हू।

इला राजेश आप उसे बुलाते तो है, अगर वह कही हिंसक हो उठा तो ?

राजेश (हसकर) नही डॉक्टर इला ! वह अपने ही किसी गहरे गम म और अज्ञात भय मे इतना डूबा है कि वह हिंसक नही हो सकता।

(पार्श्व से मोहन की आवाजें समीप आती हुई वो वो वो वो वो आ रहा है वो मुझे खा जाएगा। वो मुझे खा जायेगा। वो वा वो)

इला लो, वो आ गया।

(फटेहाल दाढी बाल बढे मला कुचला, भयभीत मोहन का प्रवेश)

राजेश मोहन, मेरी तरफ देखो ! मोहन इधर मेरी ओर हा, मुझे बताओ वो कौन है ?

मोहन (मोहन शून्य मे ताकता रहता है फिर चीखकर) वा वो बहुत भारी है पहाड से भी भारी, मैं उसके बाझ से पिस जाऊगा। मैं उसके बोझ से मर जाऊगा। मैं मैं उसका बोझ नही सह सकता। मैं उसका बोझ नही सह-सकता।(रोने लगता है) नही सह सकता, नही सह सकता। नहीं सह सकता। (मुह हाथो से छिपा लेता है)

इला (स्नेह भरे स्वर म) हम तुम्हे उसके बाझ से नही दबने देंगे,

मोहन भाई ! हम बताओ वो से तुम्हारा क्या सम्बन्ध है ? मोहन ! बताओ मोहन—वो कौन है, (पुचकारकर) बताओ। हम साफ साफ बताओ हम तुम्हें उसके बोझ से बचा लेंगे। बताओ तो !

मोहन (बीच में ही गुस्से से उछलकर) वो वो (दांत पीसते हुए, गुस्से से) मैं मैं उसे मार डालूंगा मैं उसका गला घोट दूंगा मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा (चिल्लाकर) मैं उसका नामोनिशान मिटा दूंगा। मैं उसे जिन्दा नहीं छोड़ूंगा। (गुस्से से उछलता-कूदता है। दांत किट किटाते हुए मुट्ठियां कस, आंख लालसुर्ख)

राजेश (उदास स्वर में) ओह ! क्या करूं। कुछ समझ में नहीं आता यह वो कौन है ? (हाथ मलता है। दूसरी तरफ चलता है)

इला (सहानुभूतिपूर्ण स्वर में) मोहन ! सुनो मोहन ! तुम्हारा वो कहां से आयगा ? कब आयेगा ?

मोहन वो वो वो (प्रसन्न स्वर में) वो आसमान से आयगा। वो मैं खुशियां मनाऊगा। मैं मिठाइयां बांटूंगा वो वो वो आयेगा वो आयेगा आहा मैं नाचूंगा (नाचने लगता है) मैं गाऊंगा।

राजेश (दुःख से) हे भगवान ! यह वो क्या बला है ? कभी मोहन वो के नाम पर रोता है कभी वो के नाम पर दांत पीसता है, कभी उस वो के आने पर खुशी से नाचता है ? आखिर कैसे पता लगाऊं कि वो कौन है ?

मोहन (बड़बड़ाता है) वो ? वो आ रहा है वो आ रहा है। वो मुझे मार डालेगा मुझे खा जायगा। वो वो (गुस्से से) मैं उसे मार डालूंगा। मैं उसका गला घोट दूंगा। वो वो वो (खुशी में) आ रहा है। मैं खुशियां मनाऊंगा नाचूंगा गाऊंगा। (डॉ० राजेश व इला के वार्तालाप के बीच मोहन धीमे धीमे बोलता रहता है)

इला डाक्टर राजेश ! इस केस पर सिर खपाने से अब कोई फायदा

नही। इसका मनोविश्लपण हम नही कर पायेंग।

राजेश (निराशा स) हैं, डॉक्टर इला, लगता है हम माहन के वा' तक नही पहुच पायगे।

(विमला की बाहर स आवाज)

विमला (बाहर से आवाज) नही नही, आप अन्दर नही जा सकते। डॉक्टर साहब मरीज को देख रहे हैं, लाओ, यह कलेण्डर मुझे दे दो मैं ही टाग दूगी।

इला (पुकारकर) सिस्टर विमला।

विमला (अन्दर आती है) जी, आई। (पास आकर) जी, डा० साहब!

राजेश इनडोर मे कह दो कि मोहन को ले जायें।

इला सिस्टर, यह तुम्हारे हाथ मे क्या है?

विमला यह तो कलैण्डर है डॉक्टर साहब, एक दवा वाला दे गया है आपके लिए।

राजेश जरा दिखाओ तो।

विमला लीजिए।

(कलण्डर खोलता है)

राजेश (प्रसन्न स्वर म) ओह! बहुत सुन्दर बहुत प्यारा वेरी लवली

इला (जिज्ञासा स पास जाकर देखन का प्रयास करती हुई) काहे का कलण्डर है, डॉक्टर राजेश जो इतनी तारीफ कर रहे हो?

राजेश दखा डाक्टर इला, कितना सुन्दर बच्चा है! कितना हैल्थी!! कितना लवली बच्चा है! (कलण्डर दिखाता है)

इला (प्रसन्नता-भरे स्वर मे) ओह, रियली वण्डरफुल, कितना प्यारा बच्चा!

मोहन (बडबडाता है) वो वो वो वो आ रहा है, वो बहुत भारी है पहाड स भी भारी है मैं दब जाऊगा मैं मर जाऊगा।

राजेश सिस्टर, इसे इस दीवार पर टाग दा।

विमला जी! (ले जाकर पीछे की दीवार पर कलैण्डर टागती है)

(मोहन कलण्डर देखते ही जोर से चीखता है)

मोहन (डरकर बहुत तेज चीखता हुआ) वो आ गया वो आ गया वो आ गया, वो मुझे खा जायेगा वो मुझे मार डालेगा, वो आ गया वो आ गया।

(कलण्डर को देखकर हाथो से आखें बन्द कर लेता है, बडबडाता रहता है)

इला डॉक्टर राजेश ! मोहन कलैण्डर को देखकर कह रहा है वो आ गया। वो आ गया। यह क्या रहस्य है ?

राजेश (खुशी से) हा हा, रहस्य के पर्दे उठ रहे हैं डॉक्टर इला ! रहस्य का कोहरा पिघल रहा है। मैं वो की तह तक पहुच रहा हू।

(खुशी से भरकर मोहन के पास जाता है)

मोहन (कलण्डर की ओर इशारा करके चीखकर) वो आ गया वो आ गया। वो आ गया वो मुझे खा जायेगा। वो मुझे मार डालेगा। (डाक्टर के पीछे जाकर छुपने लगता है) वो वो (कलैण्डर की तरफ इशारा करके) वो मुझे खा जायेगा।

राजेश (पीठ पर हाथ रखकर) कौन खा जायेगा ? कौन खा जायेगा तुम्हे मोहन ? बताओ (सहानुभूतिपूर्ण स्वर मे) हा हा, बताओ कौन खा जायेगा तुम्हे ?

मोहन (कलण्डर की तरफ इशारा करके) वो वो वो

राजेश (खुशी से) वो-वो ? कौन वो कौन है वो ? आ।

मोहन (बडबडाता है) वो वो वो

(डा० इला मोहन के कधे पर हाथ रखकर)

इला (प्यारभरे स्वर मे) हा वो कौन है मोहन ? कौन है ?

राजेश शाबाश ! मोहन हा बताओ वो कौन है ?

मोहन वो वो वो है वो है मेरा

इला (उतावली से) हा हा, वो तुम्हारा कौन है ?

मोहन वो है मेरा, वो है मरा वो है मेरा (चीखकर) मेरा दसवा बच्चा। मैं उसका वोझ नही सह सकता, मैं उसका वोझ नही सह सकता, वो मुझे मार डालेगा। (रोने लगता है) मुझे मार डालेगा मार डालेगा।

राजेश (राहत की साम लेकर) ओह ! आह माई गाड !

माहन (फूट फूटकर राता हुआ) मैं उसका बोझ नही सह सकता मैं उसका वोझ नही सह सक्ता मैं उमका वोझ नही सह मकता। नही सह सक्ता नही सह सक्ता नही सह सकता।

(डॉ० राजेश और डा० इला के चेहरे पर खुशी की चमक है। मोहन बडबडाता जाता है। धीरे धीरे वह मच के अगले हिस्से मे आता है वहा दशको की तरफ देख कर रोता हुआ)

मोहन मैं उसका बाझ नही सह सकूगा वा मुझे पीस डालेगा वो मुझे मार डालेगा वो मुझे (फूट फूटकर रोता है ।)

(धीरे धीरे पर्दा बन्द हो जाता है)

एक घर अपना

पात्र

मा	हरा ब्लाउज, सफेद केसरिया साडी।
कमल	प॓ट शट ।
राजू	हाफप॓ट शट ।
मधु	सलवार कुर्ता।
वर्षा	मक्सी ।

(पर्दा उठन से पूव)

रिकाड या किसी के गाने के स्वर उभरते हैं—

"एक है अपनी जमी, एक है अपना गगन,
एक है अपना जहा एक है अपना वतन,
अपने सभी सुख एक ह अपने सभी गम एक है,
आवाज दो हम एक हैं ।

(धीरे धीरे पर्दा हटना है। हल्की रोशनी म मध्यमवर्गीय परिवार का कमरा नजर आता है। दाहिनी ओर घर म जाने का दरवाजा है। (दीवार पर खिडकी हो मके तो) बाइ ओर बाहर जान का दरवाजा है। साधारण साज-सजावट है। (मुविधानुसार) सामने एक मेज (स्टूल) पर बुद्ध की मूर्ति तथा कुछ दूरी पर दूसरी मज पर एक ताजमहल की प्रतिकृति रखी हुई है। एक ओर मध्यम आकार की टेबुल पडी है जिस पर किताबें सजी हुई हैं। मेज पर (यदि सभव हो तो) पुस्तका के पास एक तरफ सरस्वती तथा दूसरी तरफ लिबर्गी की मूर्ति सजी हैं। सामने की दीवार पर (यदि सभव हो तो पूरी दीवार पर हिंदुस्तान का नक्शा बना हो। यदि न मिले तो भारत की आउटलाइन बनवा लें) हिंदुस्तान का नक्शा टगा हुआ है। फ्लावर पॉट मे तरह-तरह के रग बिरग फूल लगे है। दीवारो पर ऊपर राम, ईसा, मुहम्मद, महावीर और गाधीजी के चित्र या कलैण्डर लग हुए हैं। गाधीजी की तस्वीर बाइ ओर राजू के हिस्से म लगायी जायेगी। कमर मे ऊपर बत्तिया जल रही है। हल्का हल्का धुआ उठ रहा है। अधकार का चीरती हुई बेबीस्पाट लाइट हिंदुस्तान के नक्शे पर आकर पडती है, जो धीरे धीरे

उत्तर से दक्षिण की तरफ फिर पूर्व से पश्चिम तक सम्पूर्ण नक्शे पर पडती है, फिर सगमरमर की बुद्ध की मूर्ति, ताजमहल, ईसा, मुहम्मद, महावीर, गाधीजी की तस्वीर पर होती हुई फिर घूमकर हिदुस्तान के नक्शे पर टिक जाती है। (यदि बेबीस्पाट लाइट उपलब्ध हो तो यह व्यवस्था की जाय अन्यथा रहने दिया जाय।) गीत समाप्त होता है। इसके साथ ही रगमच रोशनी से जगमगा उठता है। फर्श पर सतोलिया खेलने का डण्डा और कुछ पत्थर के टुकडे पडे हैं, मेज के नीचे स्कूली-बग पडे हैं। पीछे से बच्चे-बच्चियो के हसी के तथा खेल के स्वर सुनाई पडते हैं)।

स्वर 'गोपी चन्नण भर्यो समन्दर,
बोल म्हारी मछली कितना पानी?
इतना पानी कि इतना पानी?
कितना पानी? "

(पार्श्व म स्वर व हसी रह रहकर चलती है। दाहिनी ओर से मा का प्रवेश, जिसने हरा ब्लाउज तथा सफेद और केसरिया रग की साडी पहन रखी है। पहन इस प्रकार से रखी है कि तिरगे ध्वज की तरह लगे। (ऐसी साडी न मिले तो विशेपत रगवा ली जाय) मा हाथ मे थैला लिये रगमच के बीचों बीच खडी होकर बच्चो की हसी सुनती है। अभिभूत होकर मुस्कराती है। फिर अपने कमरे को देखकर ममता मे अभिभूत मा दाहिनी आर मुडकर)

(बच्चा का स्वर चालू रहता है)

मा कमल (रुककर तेज स्वर म) कमल, ओ कमल! (बच्चो के स्वर बद)

कमल (अन्दर से) आया मा! (दाहिनी ओर म आकर) क्या है मां?
(बच्चा के स्वर फिर शुरू)

मा जा मधु वर्षा और राजू को बुला ला। मैं बाजार जा रही हू।

कमल अच्छा मां (दाहिने दरवाजे के पास आकर बाहर की ओर पुकारता है) आ मधु वर्षा राजू! मा बुला रही है। (खलन का स्वर बद और हसते खिलखिलाते, भागते हुए बच्चे अन्दर आते हैं। राजू आगे-आगे और वर्षा पीछे हसते हुए एक-दूसरे को पकडने के लिए

मा के चारा ओर चक्कर लगाते है। मा प्यार मे मुस्कराती है)

मधु (मा का बाया हाथ पकडकर) क्या कहती हो मा ?

वर्षा (दाया हाथ पकडकर) कहा जा रही हो, मा ?

राजू (पावा मे लिपटकर) क्या बुलाया, मा ?

मा (हसकर) अब तीनो प्रश्ना का उत्तर एक साथ, एक मुह से कैसे दू ? सुनो, मैं बाजार जा रही हू। (राजू खुशी से ताली बजाता है) घर का ध्यान रखना। (बाइ ओर चलते हुए) और हा, देखो आपस मे लडना झगडना मत ! समझे ?

कमल जी !

राजू (मचलकर) मा !

मा (उसी स्वर मे) हा !

राजू (शर्माते हुए) मेरे लिए स्वेटर लाना।

वर्षा (उत्साह से) हा मा मेरे लिए भी चप्पल लाना।

मधु मा ! मेरे लिए भी मैक्सी लाना। (वह वर्षा को अगूठा दिखाती है)

मा (लम्बी साम छोडकर कमल मे) हू ! अब तू चुप क्यो है ? तू भी कोई फरमाइश कर।

कमल (ठाठ से) अपने लिए ? (सोचकर) अपने लिए ता मा, बस सिर्फ एक क्विटल वर्फी ले आना।

(आखें बन्द करके स्वाद लेने का अभिनय करता है, अन्य बच्चे कमल को देखकर मुस्कराते हैं)

मा (हसते हुए) शैतान कही का ? अच्छा सुना, अभी तो मैं वा सामान लेन जा रही हू जो बहुत जरूरी है। शाम को बजट बनाने के बाद देखा जायेगा कि इस महीने किसकी क्या-क्या आवश्यकता पूरी की जा सकती है समझे ? अच्छा मैं जा रही हू। (चलते हुए) देखा पास-पडास के बच्चा के बहकावे मे आकर आपस म लडाई-झगडा और घर मे तोड फोड मत करना, समझे ?

मधु नही मा, हम बिलकुल नही लडेंगे।(लय मे बोलती है) तुम से जाओ, कम-म-कम दा किलो केले जल्दी से लेकर बडे प्यार मे हम सबको खिलाओ।

(सब हसते है, तालिया बजाते है, राजू नाचता है।)

मा (हसती हुई) सब शैतान है, (जाते हुए) एकदम शतान!
(बाहर चली जाती है।)

राजू (मस्ताने अदाज म) बडे भाई!

कमल (उसी अदाज मे) हा, छोटे भाई!

राजू अब क्या करें?

कमल मेरा भेजा खाओ भाई।

राजू (उसी लय मे) कोई बढिया चीज नही बताई।

कमल (चौंककर) क्या कहा? मेरा भेजा बढिया नही है।

राजू (समझौते के स्वर मे) नही भया, तुम्हारा भेजा तो एकदम फस्ट क्लास है। (स्वाद लेता हुआ जीभ चटकारते हुए) बीकानर के रसगुल्ले के माफिक, (कमल आखें बन्द कर लेता है) आगरे के पठे की तरह, दिल्ली के सोहन हलुव की तरह, मद्रास के इडली-डोस की तरह।

कमल (थूक निगलत हुए) एक बार और कह राजू! (स्वाद लता हुआ) प्यारे, एक बार और कह। तून तो बस लाइफ का मजा द दिया। (जीभ चटकारता जाता है सबके सब हसत हैं, फिर आखें खोल कर) तो हा जाये, इसी बात पर अकडम-बक्डम की एक बाजी।

मधु (उछलकर) हा, ता हो जाए, क्या क्या?

वर्षा (ताली बजाकर) बिलकुल हा जाए।

राजू (जाघ पर हाथ मारकर) ता आओ फिर मदान जग म।
(सभी बच्चे फश पर अपना-अपना एक एक हाथ उल्ट रखकर बठ जाते है। मधु एक हाथ की अगुली सबके हाथा पर रखकर बोलती हैं। मधु के दाहिनी ओर बपा और बपा की दाहिनी ओर राजू। खल मधु के हाथ स शुरू होगा तो राजू निकलगा राजू के निकलने पर खेल वर्षा क हाथ स शुरू करना पडेगा वर्षा क निकलने पर खेल मधु क हाथ स शुरू हागा)

मधु अक्डम, वकडम, बम्बे बो,
अस्सी नब्बे पूरे सौ,
सौ का लौटा, तीतर मोटा,
चल मदारी, पैसा खोटा।
(पसा खोटा राजू के हाथ पर आकर खतम होता है)

वर्षा चल भाई राजू ! तू तो निकला। (राजू खडा हो जाता है)
(फिर उसी तरह वर्षा के हाथ से शुरू करती है।)

मधु अकडम, बक्डम बम्बे बो,
अस्सी, नब्बे पूरे सौ,
सौ का लौटा, तीतर मोटा,
चल मदारी, पसा खोटा।

वर्षा (खुशी से) आहा ! मैं निक्ली।
(तालिया बजाती हुई खडी हो जाती है।)

मधु (खुद के हाथ से खेल शुरू करती है)
अकडम, बक्डम, बम्बे बो,
अस्सी नब्बे पूरे सौ,
सौ का लौटा, तीतर मोटा,
चल मदारी, पसा खोटा।

राजू (खुशी से) कमल निकल गया। मधु रह गई, मधु रह गई।
(राजू दोना हाथो के अगूठे से मधु को चिढाता है। मधु जीभ निकालकर चिढ़ाती है)

कमल (गवसहित मधु से) हाथ ऊचा कर, (मधु हाथ जोडकर बठती है) ले, (मधु के हाथ पर जोर से मारता है) हा, तो बर्फी खायेगी? (हाथ पर मारता है) ले, रसगुल्ला खायगी?
(फिर मारता है वर्षा राजू जोर से हसते हैं।)

मधु (दु ख भरे स्वर मे) इतनी जोर से मत मार कमल !

वर्षा (उत्साह से) नही कमल, जोर से लगा।

राजू (सीना फुलाकर खडा होता है) हा, खीच के कि मधु की ची बाल जाए। (मूछो पर ताव देने का अभिनय करता है)

कमल (मधु से) हा, ता क्या खायेगी ? (सोचते हुए) क्या खायगी ? (लहजे मे) पूरी, पकौडी बालूशाही, नही नही, (मधु का ध्यान चूक जाता है, फटाक से मारता है) सोहन हलवा खायगी, मेरी मधु रानी ।

मधु (रुआसी) चल, मैं नही बोलती । बहुत जोर से मारता है । एक पर दगा रख के मारता है । (रूठ जाती है, थोडी देर सब चुप)

वर्षा तो कमल अब समय का सत्यानाश कैसे करें भाई ?

कमल (लय से) आख मिचौनी खेलें मेरी बाई ।

राजू नही, दिन मे मजा नही आता आख मिचौनी खेलने मे ।

वर्षा (उत्साह से) मैं बताऊ ? रेलगाडी खेलें ।

कमल ऊ हू, क्या छक छक फक फक बोर अच्छा मधु तू बता क्या खेलें ? (बोलती नही, कमल हसाने के लिए हाथ जोडकर) मधु रानीजी आप बताइये कि क्या खेलें ? मधु रानी बडी सयानी ।

(राजू वर्षा यही गाते हुए मधु के चारो ओर चक्कर लगाते हैं मधु को हसी आ जाती है ।)

मधु (खुश होकर) मैं बताऊ ? (सोचती हुई) हू हू अपना-अपना घर बनायें ।

वर्षा हा अपना-अपना घर सजायें ।

राजू हा-हा बडा मजा आयेगा । (ताली बजाकर नाचता हुआ)

वर्षा (चारा कोना को देखती हुई दाहिनी ओर के पिछले कोने की ओर सकेत करके) तो वह कोना मेरा घर ।

राजू (दाहिनी ओर आगे की ओर सकेत) और यह कोना मेरा घर ।

कमल (बाइ ओर आगे के कोने की ओर सकेत करके) यह काना मेरा घर ।

मधु (लम्बा सास लेकर) और जो बचा वा मेरा घर । पर भाई बराबर बराबर अपने अपने घर बाट लो, वर्ना फिर झगडा होगा ।

कमल हा यह बात तो ठीक है । राजू ! टेबुल पर से चाक ला, मैं घर को चार बराबर भागा म बाट देता हू ।

(राजू, टेबल पर से चाक लाकर देता हुआ)

राजू ले, चॉक।

कमल (सामने से सीधी लाइन खीचता हुआ) हे हे ये ये लो। अब इधर से। (बायें से दायें लकीर खीचता हुआ) बस हो गये चार घर।

वर्षा हो गये।

(दाहिनी ओर के दो हिस्सा मे से पीछे का हिस्सा मधु का आगे कमल का, बाइ ओर पीछे का जिसमे मेज है वर्षा का और शेष राजू का।)

राजू तो सजाओ देखें कौन अच्छा सजाता है?

मधु (दाहिनी ओर अन्दर जाते हुए) पिताजी आज जो कलैण्डर लाये थे, उन्हे मैं अपने घर मे लगाऊगी।

(वर्षा और राजू घर सजाने के बारे मे सोच रहे है)

कमल (अन्दर की ओर देखकर तेज स्वर म) उसमे से एक कलैण्डर मैं लूगा।

(मधु दोना कलण्डर लाती है। कमल खोलकर दिखाता है, एक मे मन्दिर है, दूसरे मे मस्जिद है।)

कमल यह मदिर वाला कलण्डर मैं लगाऊगा।

मधु अच्छा, यह मस्जिद वाला मैं लगा लूगी।

(दोनो कीलें ठोकते है या आलपिनें लेकर दीवारा पर टागते हैं।)

वर्षा (राजू से) चल अपन भी सजाने की चीजें अन्दर से लायें।

(दोनो दाहिने दरवाजे से जाते हैं)

कमल (मधु को कलण्डर टागते देखकर) ऐ मधु! इस दीवार पर तू मस्जिद का कलैण्डर मत लगा इस पर मैं मन्दिर की तस्वीर लगा रहा हू।

मधु (हाथ रोककर) क्या? यह घर मेरा है ना? मैं तो मस्जिद का कलण्डर ही लगाऊगी। ऐसा ही है तो तू इस दीवार पर म की तस्वीर मत लगा।

कमल (मधु से) हा, तो क्या खायेगी ? (सोचते हुए) क्या खायगी ? (लहजे मे) पूरी, पकौडी, वालूशाही, नही नही, (मधु का ध्यान चूक जाता है, फटाक से मारता है) सोहन हलवा खायगी, मरी मधु रानी !

मधु (रुआसी) चल, मैं नही बोलती। बहुत जोर से मारता है। एक पर दगा रख के मारता है। (रूठ जाती है, थोडी देर सब चुप)

वर्षा तो कमल अब समय का सत्यानाश कैसे करें भाई ?

कमल (लय से) आख मिचौनी खेलें मेरी वाई !

राजू नही, दिन म मजा नही आता आख मिचौनी खेलने मे।

वर्षा (उत्साह से) मैं बताऊ ? रेलगाडी खेलें।

कमल ऊ हू, क्या छक छक फक फक वोर अच्छा मधु तू बता क्या खेलें ? (वोलती नही, कमल हसाने के लिए हाथ जोडकर) मधु रानीजी, आप बताइये कि क्या खेलें ? मधु रानी, वडी सयानी।

(राजू, वर्षा यही गाते हुए मधु के चारो ओर चक्कर लगाते हैं मधु को हसी आ जाती है।)

मधु (खुश होकर) मैं बताऊ ? (सोचती हुई) हू हू अपना-अपना घर बनायें।

वर्षा हा अपना अपना घर सजायें।

राजू हा-हा वडा मजा आयेगा। (ताली बजाकर नाचता हुआ)

वर्षा (चारो कोनो को देखती हुई दाहिनी ओर के पिछले कोन की ओर सकेत करके) तो वह कोना मेरा घर।

राजू (दाहिनी ओर आग की ओर सकेत) और यह कोना मेरा घर।

कमल (बाइ ओर आग के कोने की ओर सकेत करके) यह काना मेरा घर।

मधु (लम्वा सास लेकर) और जो बचा वो मेरा घर। पर भाइ बराबर-बरावर अपने अपने घर बाट लो वर्ना फिर झगडा होगा।

कमल हा यह बात तो ठीक है। राजू ! टेबुल पर मे चाक ला मैं घर को चार बराबर भागा मे बाट देता हू।

(राजू, टेबल पर से चॉक लाकर देता हुआ)

राजू ले, चॉक।

कमल (सामने से सीधी लाइन खीचता हुआ) हे हे ये ये लो। अब इधर से। (बायें से दायें लकीर खीचता हुआ) बस हो गये चार घर।

वर्षा हो गये।

(दाहिनी ओर के दो हिस्सा मे से पीछे का हिस्सा मधु का, आगे कमल का, बाइ ओर पीछे का जिसमे मेज है वर्षा का और शेष राजू का।)

राजू तो सजाओ, दखें कौन अच्छा सजाता है?

मधु (दाहिनी ओर अन्दर जाते हुए) पिताजी आज जो कलण्डर लाये थे, उन्हे मैं अपने घर म लगाऊगी।

(वर्षा और राजू घर सजाने के बारे म सोच रहे हैं)

कमल (अन्दर की ओर देखकर तेज स्वर मे) उसमे से एक कलण्डर मैं लूगा।

(मधु दोनो कलण्डर लाती है। कमल खोलकर दिखाता है, एक मे मन्दिर है, दूसरे मे मस्जिद है।)

कमल यह मन्दिर वाला कलैण्डर मैं लगाऊगा।

मधु अच्छा, यह मस्जिद वाला मैं लगा लूगी।

(दोनो कीलें ठोकते हैं या आलपिनें लेकर दीवारो पर टागते हैं।)

वर्षा (राजू से) चल अपन भी सजाने की चीजें अन्दर से लायें।

(दोनो दाहिने दरवाजे से जाते हैं)

कमल (मधु को कलैण्डर टागते देखकर) ऐ मधु! इस दीवार पर तू मस्जिद का कलैण्डर मत लगा, इस पर मैं मन्दिर की तस्वीर लगा रहा हू।

मधु (हाथ रोककर) क्या? यह घर मेरा है ना? मैं तो मजिस्द का कलण्डर ही लगाऊगी। ऐसा ही है तो तू इस दीवार पर मन्दिर की तस्वीर मत लगा।

कमल (गुस्से से) क्यो नही लगाऊ ? (जोर देते हुए) मैं तो मदिर की तस्वीर ही लगाऊगा। मुझे कौन रोक सकता है ?

(बाह चढाता है।)

मधु (चिढकर) तो मुझे कौन रोक सकता है ? मैं भी मस्जिद का कलण्डर ही लगाऊगी। यह मेरा घर है, इसम मरी मर्जी चलेगी, मैं जो चाहू लगाऊ, तुम कौन होते हो रोकने वाले ? मेरे घर क मामले म टाग अडान वाले ?

कमल (गुस्स स) कैसे लगाती है ? देखता हू। (मधु की ओर बढता है)

मधु (हठपूवक) कौन रोकता है, मैं भी देखती हू ? (कीलें ठोकन का प्रयास)

कमल (आगे बढकर चेतावानी देते हुए) देख तू मान जा वर्ना ठीक नही रहेगा। मैं तेरे कलण्डर के चीर चीर उडा दूगा।

मधु (गुस्से से) अरे, मैं भी तेरी तस्वीर के टुकडे टुकडे कर डालूगी।

कमल (मुट्ठिया कसकर चेहरे पर क्रोध के भाव) अच्छा, यह हिम्मत, तो लगा दखता हू कसे लगाती है ? (आगे बढता है)

मधु (क्रोध मे) दख कमल, आगे मत बढना वर्ना वर्ना बहुत बुरा होगा। देख, मेरे घरेलू मामले में हस्तक्षेप मत कर वर्ना

(मास फूल जाती है)

कमल (पागल-सा) जो होगा, देखा जायेगा। पर इस दीवार पर मस्जिद का कलण्डर नही लगाने दूगा। (एक एक शब्द पर जोर देते हुए) इस पर तो मदिर की तस्वीर ही लगेगी।

मधु (बीच म उसी स्वर म) और मैं इस दीवार पर मस्जिद का कलण्डर ही लगा के रहूगी। (चेहरे पर दृढ-सकल्प का भाव)

कमल (पास आकर) तो लगा, लगा देखता हू कसे लगाती है।

मधु (कील ठोकती है)

कमल (झपटकर कलण्डर छीनते हुए) अच्छा, नही मानेगी ? तो ले तेरा कलण्डर (फाडने लगता है।)

मधु (चीखकर) देख कमल इस कलण्डर का मत फाड, वर्ना वर्ना मुझ सा बुरा कोई नही होगा। (आगे झपटती है, कमल भाव

कमल हाय, आह, अरे राक्षसनी, पिशाचिनी, मेरा सिर फोड डाला। (सिर पर हाथ फेरता है—खून भरा देखकर) अरे, मेर खून बह रहा है। हैवान कही की ? आह ओह !

(सिर से खून बहता है चेहरे व कपड़ों पर खून गिरता है)

मधु (पागला-सी हसी हसती है) और लगा मदिर की तस्वीर।

कमल (गुस्स से) अच्छा, तो ले (पत्थर फेंकता है)

(मधु बच जाती है, पर वह पत्थर मूर्ति को लगता है।) (यदि मूर्ति नही तुडवानी हो ता गुस्मे म उठाकर अदर जाकर तोडने का अभिनय। दूर से टूटने की आवाज। वर्षा और राजू कागज लिये दाहिन दरवाजे से आते हैं)

वर्षा (डरकर) अरे बाप रे ! बुद्ध की मूर्ति टूट गई। पिताजी जान ले लेंगे।

मधु (अनसुनी करक गुस्से से) और तू भी ले (डडा फेंकती है)

(कमल बचता है पर उससे ताजमहल टूट जाता है यदि नही टूटे तो डडे से जाकर तोड दे, यदि ताजमहल नहीं तुडवाना हो तो गुस्से से अदर जाकर टूटने की आवाज करती है)

राजू (घबराकर) मारे गये मदिर मस्जिद के झगडे म प्यारा-सा ताजमहल भी टूट गया। आज मा हम सबकी खाल खीच डालेगी। वर्षा रोको, इनको मना करो, वना ये सारे घर को तोड-फोड डालेंगे।

(कमल और मधु एक-दूसरे को खा जाने वाली नजरा से देखते है, सास फूल रहा है)

वर्षा चलो अपन दोना बीच मे खडे हो जाए, वना इन दानो पर तो खून सवार हो रहा है। ये दोनो मदिर मस्जिद के पीछे पागल हो रहे है।

राजू (साहस करके) चलो !

वर्षा (आगे बढकर) ऐ कमल ऐ मधु रुक जाओ, रुक जाओ।

राजू (मधु का हाथ पकडकर खीचते हुए) बद करो झगडा, वर्ना मा

और पिताजी सबकी जान ले लेंगे। वो सजा देंगे की जिन्दगी भर याद रखेंगे। सुन रहे हो?

(हाथ झिंझोडकर दोनो लडना बन्द कर देते है कमल गुस्से से खडा है, साँसें तेज चल रही है)

वर्षा (कमल के कान मे जोर से चीखकर) सुन रहे हो?

कमल (चौंककर कराहते हुए) है, हा हा अरे बाप रे! (बुद्ध की मूर्ति तथा ताजमहल को टूटा देखकर) आज तो मारे गये, मार पिटेगी ही।

मधु (ताजमहल के टुकडे उठाकर रोती हुई) आज तो मा मेरा एक एक बाल नोच डालेगी। (चेहरे पर दुख के भाव)

(कमल और मधु दोनो भयभीत एव उदास बैठे हैं)

राजू (कमल का हाथ पकडकर) चलो, अब चुपचाप अन्दर वाले कमरे मे बैठ जाओ। (मधु से) जाओ मधु तुम भी अन्दर जाकर, घर का काम निबटा लो।

वर्षा हा जाओ मधु तुम भी घर म जाकर काम करो।

(दोनो, दोना का हाथ पकडकर दाहिनी ओर के दरवाजे स बाहर पहुचा देते हैं)

वर्षा (अपने कोने की ओर आते हुए) चलो, राजू अपन भी पढें।

राजू चलो, (जाते हुए राजू मेज स टकराता है। दद से चीखकर लगडाता हुआ) अरे बाप रे! टाग टूट गई। वर्षा की बच्ची [illegible] तेरी मेज मेरी सीमा म आई हुई है। हटा इसे, मेरी सीमा [illegible] आह (एक टाग पर चलता है।)

वर्षा (सीमा रेखा देखकर) [illegible] है तो तेरी सीमा म पर [illegible] सवाल ही नहीं [illegible]। सीमा बट गयी, सो [illegible] वक्त क्यों नहीं [illegible]?

राजू (चौंककर [illegible] हुआ) अरे [illegible] [illegible] [illegible] कुछ [illegible] है। मैं [illegible] [illegible] ही रहूंगा।

वर्षा (सीमा [illegible]) अब [illegible]

पर मेरा है। अब इस पर तेरा कोई हक नहीं हो सकता। और फिर यह हिस्सा मेरे हिस्से में आयी मेज की लम्बाई के अनुसार भी है। इसलिए इसका मेरे हिस्से में ही रहना जरूरी है।

(पार्श्व में)

चिट्ठी में सबसे पहिले, लिखता तुमको राम-राम,
प्रांत प्रांत से टकराता, भाषा पर भाषा की लात,
मैं पंजाबी तू बंगाली, कौन कहे भारत की बात।

राजू (गुस्से से) तुम्हारी मेज की लम्बाई की खातिर मैं अपने हक को, अपने अधिकार को नहीं छिनने दूंगा। (छाती पीटकर चाहे जान चली जाए पर मैं अपना हक लेकर ही रहूंगा।)

वर्षा (चेतावनी देती हुई) तो कान खोलकर सुन ले, महाभारत हुए बिना नहीं रहेगा।

राजू (वर्षा के हिस्से की तरफ बढ़ता हुआ) एक महाभारत क्या ? सौ महाभारत हो जाए मैं इस डर से पीछे नहीं हटने वाला समझी ? (कमर पर हाथ रखकर तनता है) ठहर ! (मेज पर से चाकू उठाकर लाता हुआ) अभी चाकू लाकर महाभारत की शुरुआत करता हूं।

वर्षा (जोर से) देख राजू, मान जा वरना इसका नतीजा बहुत बुरा होगा। (राजू सीमारेखा की तरफ मेज के पास आता है) देख, देख, तू इस सीमारेखा को मत बदल। मैं कहती हूं। मत बदल, देख मान जा, (राजू मेज खिसकाता है। वर्षा गुस्से से) नहीं मानता, तो ले (धक्का देती है राजू मेज से टकराता है)

राजू (दर्द में) आह इतनी जोर से धक्का देती है। ठहर ले चख इसका फल (चटाक से थप्पड मारता है)

वर्षा तो तू भी ले (घूंसे-थप्पड़ों का युद्ध, मेज से टकराते हैं। राजू फर्श पर गिर जाता है) ले ले ले (थप्पड़ें मारती है)

राजू (बाल पकड़कर) ठहर, सालो का एक-एक बाल नहीं नोच डाला तो (बाल खींचता है)

वर्षा (दर्द से छटपटाती है) अरे, छोड़ दे ! छोड़ दे दुष्ट ! अरे मेरे बाल

टूट रहे हैं। (राजू वर्षा के बाल खीचकर उसे फर्श पर उलट देता है और खीचता है।) अरे, छोड दे! बाल पकडकर मत घसीट। अरे, अरे, मेरे दर्द हो रहा है। (हाथ-पाव फेंकती है। राजू बाल पकडकर घसीटता है। पीछे से गीत उभरता है। डायलाग के साथ-साथ चलता है)

वैष्णव जन तो तेने कहिए
जे पीर पराई जाने रे।

राजू (गुस्से मे घसीटता हुआ) छोड दू? तुझे घर से बाहर फेंक के आऊगा।

वर्षा (रोती हुई) अरे! मेरे दर्द हो रहा है छोड दे। छोड दे राजू, (गुस्से से) नही छोडता तो ले (पाव को काट खाती है)

राजू (बाल छोडकर और खीचकर) अरे बाप रे! काट खाया रे आह आह मर गया अरे ओह ठहर वर्षा की बच्ची, तेरा सिर नही फोडा तो मेरा नाम राजू नही। आह (पाव सहलाता है) ठहर, आया। (लगडाता हुआ) मेज पर से गुलदस्ता उठाता है।

वर्षा (उठती हुई भय से) देख, राजू! गुलदस्ता रख दे, गुलदस्ते से मत मारना। मेरा सिर फूट जाएगा, रख दे। गुलदस्ता रख दे, नही रखता तो फिर मैं (इधर उधर देखकर ताजमहल के पास पडे पत्थर को उठाती है) यह पत्थर फेंकती हू। मुझे पता नही है अगर तेरे कही लग गई तो

राजू (गुस्से मे पागल) लगने दे मैं बदला लेके रहूगा।
(गुलदस्ता उठाये-उठाये वर्षा की ओर बढता है)

वर्षा (चेतावनी भरे स्वर मे) देख, मान जा। नही मानता, नही मानता तो ले।

(राजू वर्षा के पास पहुच जाता है वर्षा जो पत्थर फेंकती है वह गाधीजी की तस्वीर मे जाकर लगता है। तस्वीर फूट जाती है, एक और पत्थर फेंकती है जिससे बल्ब फूट जाता है। कमल और मधु दाहिनी ओर से घबराए से आते हैं।

खड़े देखत रह जाते हैं)

राजू (गुस्से स) अच्छा पत्थर फेंककर मेरी गाधीजी की तस्वीर फाड दी। मर घर म अधेरा कर दिया। मैं भी तरे हिस्से की इट से इट बजा दूगा। ले (गुलदस्ता फेंकता है, फिर ताजमहल क टुकडे लेकर फेंकता है। खिडकी के काच टूटत हैं।) ले (फिर काच टूटते हैं) न ल ले ले।

(ताजमहल के टुकडे फेंकता रहता है।)

मधु (कमल स) *कमल, अब बन्द करवाओ यह झगडा। गाधीजी की* तस्वीर टूट गयी, खिडकिया मे काच टूट गये, गुलदस्त टूट गय। मा और पिताजी सबको मार-मारकर गगाजी पहुचा देंगे।

कमल (घबराकर) हा, बात तो सही है। (जोर से) राजू, ऐ वर्षा, बन्द करो झगडा।

मधु देखो देखो आपसी लडाई से घर बरबाद हो गया, पिताजी और मा खाल खीच डालेंगे।

कमल (राजू का हाथ पकडकर) आज वो पिटाई होगी कि अगले जन्म तक याद आयगी। (वर्षा से) बन्द करो झगडा, और अपना-अपना पाठ याद करो जाओ। देखो देखो (कमल दोनो को टूट फूट दिखाता है।)

राजू (घबराकर) अर, बाप रे! मारे गये मुफ्त म, आज तो साक्षात भगवान भी धरती पर उतर आय तो भी हम मा और पिताजी की मार से नही बचा सकता। ओ वर्षा की बच्ची! जल्दी से ये काच साफ कर दे वर्ना

वर्षा मरा कर ठेंगा (ठेंगा दिखाती है) तुझे गरज हो तो तू कर।

राजू (गरजकर) क्या कहा नही करती?

वर्षा (कमर पर हाथ रखकर) हा, हा नही करती, और कहा नही करती और कहा नही करती, नही करती, नही करती सौ बार नही करती।

राजू (गरज क) अच्छा देखता हू कसे नही करती?

(वर्षा की तरफ गुस्से से बढता है)

'मधु (बीच मे) ऐ, फिर लडने लगे ? चलो, चुपचाप बठो, वठकर पढो, वर्ना मा आते ही वह पिटाई करेगी कि जाओ, अपने अपने घर मे।

(सभी मेज के नीचे से अपने अपने स्कूल वैग लेकर कुछ देर किताब के पन्ने पलटते हैं। धीर धीरे पाठ याद करने मे लग जाते है। हा, कमल धीरे-धीरे हिन्दी पढ रहा है, राजू तेज स्वर मे अग्रेजी पढ रहा है)

कमल भारत अहिसा और शाति का पुजारी है। सभ्यता का सूय यही उदय हुआ था। यह सच्चाई का मन्दिर है। यह देवताओ का देवालय सभ्यता और सस्कृति का देश है, विश्वगुरु है।

राजू (जोर से) इण्डिया इज ए कन्ट्री ऑफ ब्लक मजिक, ब्लैक स्नेक्स एण्ड सन्यासीज (रुककर) ए कमल, हिन्दी पढना बन्द कर मैं अग्रेजी पढ रहा हू।

कमल (पुस्तक पर नजर गडाये हुए) तो पढ न, तुझे कौन मना कर रहा है?

राजू (शान से अग्रेजोनुमा हिन्दी बोलता है) ऐ मैन, तुम्हारी हिन्दी से हमे डिस्टव होता है तुम हिन्दी नही पढेगा।

कमल (चिढाते हु ए) अगर हमारी हिन्दी से तुम्हे डिस्टर्ब होता है, तो तुम भी हिन्दी पढो तुम्ह कौन रोकता है?

राजू (गव से) ओह ! नो, हम अग्रेजी पढेगा और तुमको भी पढना पडेगा। क्या समझा मैन?

कमल (किताब बन्द करते हुए दृढ स्वर म) नही, मैं अग्रेजी हरगिज नही पढूगा। मैं हिन्दी ही पढूगा। तुम मुझ पर अग्रेजी नही थोप सकते।

राजू (जोर देते हुए) और तुम मुझ पर हिन्दी नही थाप सकते। तुम्ह अग्रेजी पढनी पडेगी।

कमल (दृढ स्वर मे) नही, तुम्ह हिन्दी पढनी पडेगी।

राजू (गुस्सा-भर स्वर म) हम नही पढेगा, हिन्दी कभी नही पढ़ेगा।

कमल (उठकर) तो मैं भी अग्रेजी हरगिज, हरगिज नही पढूगा।

राजू (चेतावनीभरे स्वर म) देखता हू कसे हिन्दी पढता है?

कमल (चिढाते हुए) ये देख पढता हू (कमल जोर-जोर से पढता है) भारत सभ्यता की जन्मभूमि है, यह धर्मों की पुण्य भूमि है। सोने की चिडिया

राजू (उठकर जाते हुए) अच्छा, तुझको अभी बताता हू। (पास आकर किताब छीनकर फाडते हुए) यह ले सभ्यता की जन्मभूमि! (फिर फाडकर) यह ले धर्मों की पुण्य-स्थली। (फिर फाडकर) ये ले, तेरी सोने की चिडिया (कागज हवा में उडाकर) देख, उडती हुई कैसी प्यारी लगती है तेरी सोने की चिडिया? (हसता है)

कमल (गुस्से में आगे बढकर लडते हैं। कपडे फाड डालते हैं फिर राजू की किताब उठाकर) अच्छा मेरी किताब फाड डाली तो ले तेरी 'ए ब्रिज टू सिविलाइजेशन' का ब्रिज ही तोड डालता हू, ले

(पृष्ठ फाड देता है)।

राजू (गुस्से से झपटते हुए) अच्छा, इतनी हिम्मत? मेरी अंग्रेजी की किताब फाड डाली। मैं तेरी हिंदी को जला दूगा। इस मेज पर पडी सारी हिंदी की पुस्तकें जला डालूगा। (मेज के पास जाकर एक एक पुस्तक उठाकर उनके नाम पढ़-पढ़कर) यह तेरी रामायण, (फर्श पर फेंकता है) यह भारत का राष्ट्रीय ध्वज, यह भारत का धर्म, सभ्यता और संस्कृति का इतिहास, यह तुम्हारा सूरदास, तुलसीदास, कबीरदास इन सबको, इन सबका जला डालूगा अभी लाता हू केरोसिन।

(तेजी से दाहिनी ओर अन्दर चला जाता है, कमल खडा हसता रहता है अंग्रेजी किताब के पन्ने फाडकर नफरत से उडाता है।)

वर्षा मधु रोको इन्हें, गजब हो जायेगा। यह पागल मां और पिताजी की सभी किताबें जला देगा।

मधु (समझाते हुए) हम अच्छे, सभ्य पडोसियों की तरह चुपचाप रहकर तमाशा देखना चाहिए। इन दोनों के परस्पर मामले में हमें कोई हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए।

(राजू केरोसिन की बोतल व माचिस लाता है)

(यदि यह दश्य रगमच पर दिखाना सभव न हो तो दाहिनी ओर के दरवाजे क पीछे से जो घर म जान का है, लाल लाइट जलाकर आग का दृश्य सर्जित किया जाय। पर मच पर से किताब उधर फेंकते हुए डायलाग बोल जाय। कुछ डायलाग अन्दर जाकर बोले जायेंगे। यदि यह भी सभव नही हो तो सिर्फ किताबें फाडने का ही क्रम रखा जा सकता है। यदि पीछे सफेद पर्दा है तो भारत के नक्शे के बीच शडोसी से आग जलती दिखायी जा सकती है। डायलाग मे थोडा परिवतन करके।)

राजू (गुस्से से) यह ले यह ले यह तेल छिडक दिया और यह लगाई आग। (माचिस जलाता है)

कमल देख राजू, बुझा दे माचिस वर्ना इस आग से सारा घर जल जायेगा।

राजू (हाफकर) जलने दे, साथ ही तेरी हिन्दी का भी जनाजा निकल जायेगा। (हसता है)

कमल (दढ स्वर म) हिन्दी का जनाजा तो मेरे जीत जी नही निकल सकता। मैं जिन्दा जल सकता हू। (छाती पीटत हुए) पर हिन्दी का जनाजा नही निकलने दूगा।

राजू यह तुम्हारी हिन्दी का निकला जनाजा। (माचिस से आग लगा देता है।)

(जहा किताबे जलाइ जायें वहा पहले ही लाहे की चद्दर बिछायी जानी चाहिए ताकि आग लगने का डर न रहे। घर के अन्दर जलानी हो तो माचिस अन्दर फेंक दें। रगमच पर अधेरा करके दरवाजे मे से लाल रोशनी स आग का दश्य प्रस्तुत करें।)

मधु चलो वर्षा, अब बीच-बचाव करें, वर्ना इस आग स अपना घर भी जल जायेगा। अपन भी जल जायेंग।

वर्षा (व्यग्य स) नही बहन! हमे तो सभ्य पडोसिया की तरह ख रहकर दूसरो के घर जलने का तमाशा देखना च

दूसरो के घरेलू मामलो मे टाग नही अडानी चाहिए। (रुककर व्यग्य से) क्यो? जब मुझ पर आच आयी थी, तब कहा गई थी तुम्हारी सभ्यता, तटस्थता? और अब चली आग बुझाने? (कुछ ठहरकर) खैर! चल आ, आग पर पानी डालें, मिट्टी लायें।

(वर्षा अन्दर जाती है मधु बाहर। पीछे से सगीत उभरता है धीमे स्वर म)

बच्चे तुम तकदीर हो,
कल के हिन्दुस्तान की।
बापू के वरदान की,
नेहरू के अरमान की।

राजू (हसता हुआ पुस्तकें फाडता है) होली, होली, हिन्दी की होली। हा हा हा (तीव्र स्वर मे) होली

कमल (मेज पर से पुस्तकें उठाकर उनके नाम पढ पढकर) अच्छा तो ले अग्रेजी की भी होली ये ले पैराडाइज लोस्ट, यह ले मैकबैथ यह ले कीटस, शली बर्नाडशा, यह ले, बड सवथ (जगली की तरह हसता है) यह ले न्यूटन, यह आइन्सटीन यह अग्रेजी की होली, अग्रेजी की होली

(दोना पागलो की तरह तालिया बजा-बजाकर हसते है, हाथ ऊचे करके हसते है। बाइ आर से मधु धूल लाती है कडाही मे, दाहिनी ओर से वर्षा पानी की बाल्टी लाती है)

मधु (हडबडी से) हा, सारी बाल्टी उडेल दे।

वर्षा तू पूरी माटी बिखेर दे।

मधु हा, इधर इस किताब पर

(आग बुझाने की कोशिश कर रह हैं।)

मा (बाहर से) कमल, राजू, मधु वषा (अन्दर आकर आश्चय से) अरे, यह क्या हो रहा है? अर यह आग कसी? (कमल व राजू दोनो पास खडे हैं। एक-दूसरे को खूनी नजर स देख रहे हैं। मा घबराहट मे) हटो हटो अरे यह घर का क्या हाल बना दिया है तुम पागला ने?

कमल (गुस्से से दांत पीसकर) तुम हट जाओ मां, मैं आज अंग्रेजी का जनाजा निकाल कर रहूंगा। (मां बीच में खड़ी हो जाती है)

राजू (गुस्से से मुट्ठियां तानते हुए, मां को दूर हटाता है) मां, तुम बीच में मत आओ, आज मैं हिन्दी का श्मशान जला दूंगा।

(दोनों एक दूसरे का गला पकड़ते हैं।)

मां (गुस्से से दोनों को थप्पड़ मारकर डांटती हुई) बदतमीजो, यह घर है अपना घर! श्मशान नहीं है, लड़ाई का मैदान नहीं है बन्द करो झगड़ा (कमल और राजू का जैसे नशा उतर गया हो। धीरे धीरे शान्त होकर सिर झुका लेते हैं) अरे, (चौंककर) ये खिड़कियों के कांच, यह बुद्ध की मूर्ति, ये मेरा ताजमहल ये किसने तोड़े? किसने तोड़े? मैं पूछती हूं किसने तोड़े? बोलो, जवाब दो? (सभी सिर झुकाए खड़े हैं, मां दर्द भरे स्वर में) तुम्हारे आये दिन के झगड़ा-दंगा से पूरा घर तहस-नहस हो जाता है। क्या तुम नहीं जानते, यह घर तुम्हारा है? इसका हर नुकसान तुम्हारा है? (गहरी सांस लेकर) हम चाहते हैं, तुम्हें अच्छा जीवन दें, अच्छी शिक्षा दें, अच्छा पालन पोषण करें अच्छा वातावरण दें, पर तुम्हारी तोड़ फोड़ इस घर का बजट बिगाड़ देती है। हमारी सभी योजनाएं धरी रह जाती हैं। फिर तुम हमें दोष देते हो। पर मैं आज तुमसे पूछती हूं, बोलो दोषी कौन है? कौन है इसका दोषी? (सभी चुप) मैं कहती हूं, तुम तुम तुम और तुम (चारों की ओर संकेत करके और फिर सभी दर्शकों की ओर देखकर संकेत) और तुम, सभी सिर झुकाये क्या खड़े हो? बोलो! मुंह पर ताले क्यों पड़ गये? बोलो! (गुस्से से) बोलो! (कमल की ओर देखकर) कमल, चलो इधर आओ! (स्वर तेज) इधर आओ! (कमल कांपता है) कांपता क्या है? चलो, इधर आओ। बोलो यह ताजमहल यह बुद्ध की मूर्ति कैसे टूटी?

कमल (घबराते हुए हकलाते हुए) जी जी बात यह है कि झगड़ा मंदिर-मस्जिद को लेकर हुआ।

मा (आश्चयचकित होकर) मदिर और मस्जिद को लेकर ? पर क्यो ? किसलिए ? मधु की ओर देखकर तू बता मधु।

मधु (घबराकर) इसलिए मा, कि कमल ने मुझसे कहा कि जिस दीवार पर मदिर की तस्वीर लगेगी—मैं उस दीवार पर मस्जिद का कलैण्डर नही लगाने दूगा और मैंने कहा कि इस दीवार पर मैं भी मस्जिद का कलण्डर लगाऊगी, इस पर मैं भी मदिर की तस्वीर नही लगाने दूगी।

मा (दुख मिश्रित स्वर मे) ओह ! यह तुमने क्या किया ?

कमल (सिर झुकाकर) इसी को लेकर बात बढती गयी और यहा तक कि पथराव भी हो गया। ये देखो, हम चाटें भी आयी है। (चोट दिखाता है) और उसी पथराव स बुद्ध की मूर्ति और ताजमहल भी टूट गया।

मा (कमल के सिर से बहा खून देखकर, दु ख की लम्बी सास छोड कर) इस मजहबी भावना के अधे जुनून म तुमने यह मुहब्बत का महल और अहिसा की मूर्ति तोड डाली ? (दु ख भरे स्वर मे) छि छि छि कितना नीच और घिनौना काम किया है तुम लोगो ने ? क्या हो जाता अगर इस दीवार पर मदिर और मस्जिद दोनो की तस्वीरें टग जाती ? शतानो मजहब मुहब्बत करने से ऊचा उठता है नफरत करने स नही। और तुमन, तुमने मजहब के नाम पर इस घर का सत्यानाश कर डाला। कितना नुकसान किया है तुमने ? (दद से) ओह !

कमल (दु ख भर स्वर मे) मा, मैं बहुत शर्मिदा हू।

मधु (सिमकती हुई) मा, अब हम ऐसा नही करेंगे मा !

मा (राजू मा के पीछे सिर चुकाए खडा है) राजू ! सामने आओ।

(राजू डरता हुआ सिर झुकाए आता है)

राजू (डरता हुआ) जी जी मा !

मा तुम बताओ यह आग किसन लगाई ? इस आग से घर जल जाता तो ?

राजू (थूक निगलत हुए) मा बात यह थी कि कमल और मेरे

बीच हिंदी और अंग्रेजी को लेकर झगडा हुआ।

मा (आश्चर्य स) हिंदी और अंग्रेजी भाषा को लेकर ?

राजू हा, मैंने कमल से कहा तुम्हें अंग्रेजी पढनी ही पडेगी और कमल कहने लगा, तुझे हिंदी पढनी पडेगी बस झगडा बढता गया और बढते-बढते इतना बढ गया कि हम एक दूसरे के खून के प्यासे हो गय और इस गुस्से मे हमन हिंदी और अंग्रेजी की किताब जला डाली।

मा (आसू भीगे स्वर मे) ओह ! तुमने क्या किया ? इन भाषाओ के झगडे के पीछे यह क्या कर दिया ? सभ्यता और सस्कृति जला डाली ? राजनीति और राष्ट्रीयता को जला डाली ? विज्ञान और इन्सानियत भी जला डाली ? प्यार, मुहब्बत और जीवन की हर अच्छाई को जला डाला ? सूरदास, तुलसीदास, और शेक्सपियर का जला डाला ? (दुख भरी आह छोडकर) आह !

कमल (दुख से) मा वास्तव मे हमसे बडी गलती हुई।

मा (समझाते हुए) अरे, पागलो ! साहित्य मानव जाति का इतिहास है, पथ प्रदर्शक है भविष्य का द्रष्टा है। इसे जलाकर तुमने देश, जाति और मानवता पर कलक लगाया है। (उदास से स्वर म) यह तुमने क्या किया मेरे बेटो ? और गुस्से मे पागल हुए तुम नही समझते कि तुमन भाषाओ के नाम पर कितना बडा पाप किया है, कितना बडा गुनाह किया है ?

(मा रामायण उठाकर छाती से लगाती हुई सिसक उठती है।)

राजू (रोता हुआ) मा ! मैं बडा शर्मिन्दा हू। मुझे माफ कर दो। आइन्दा ऐसी भूल कभी नही होगी। (मा की सिसक बढती जाती है) मा, मैं तुम्हारे चरणो की सौगन्ध खाता हू।

(राजू मा के पाव पकडता है। मा आख बन्द कर लेती है। सिर झुकाकर कमल भी मा के चरणो म बैठ जाता है। दोनो मा के दायें-बायें पाव से चिपटत हैं। मा उनके सिर पर हाथ रखे हुए है। आखें बन्द, आखो म आसू बह रहे हैं।

थोडी देर वाद)

मा हू और यह महात्मा गाधी की तस्वीर क्स फूटी ? य खिडकी से काच कैस टूटे ? यह बन्य क्स फूटा ?

राजू (खडा होकर वर्षा की तरफ देखकर) जी यह सब वर्षा क कारण हुआ।

मा वर्षा, नजर उठा, नजर झुकाकर जिन्दगी का मामना नही किया जा सकता। सामना दख (डाटकर) सामन देख, (वपा धीरे धीर नजर उठाती है) हा अब वाल य कैसे टूट ?

वर्षा (डरती हुई) मा हमने घर को चार हिस्सो म वाट लिया था।

मा (चौककर) *क्या कहा ? अपन घर का चार हिस्सा म वाट लिया था ?*

वर्षा हा हर कोना हमारा अलग-अलग घर वन गया

मा (दद से घर के विभाजन को देखते हुए) आह ! य ही है वे चाक की लकीरें जिन्होंने इस घर को चार टुकडा म वाट दिया। भाई भाई का जुदा कर दिया। इन्सान इन्सान को जुदा कर दिया। (ठहरकर दद से इशारा करते हुए।) यह कमल का, वह एक राजू का इधर एक वर्षा का और उधर मधु का। जमीन के इन टुकडा के पीछे तुमने अपने पूरे घर को भुला दिया ? तुमने अपनी मा को भुला दिया। (रुक रुककर दर्द से) वटवारे की इस अधी दौड म तुम घर को तो वाट सकते हो—पर पर क्या तुम अपनी मा को भी चार हिस्सा म वाट सकते हो बोलो ? (रगमच के बीच मे आकर) आज सीमाओ के इन चौराहा पर खडी मा किसके हिस्से म जायेगी ? (रुककर) कहा जायगी वो ? (फिर रुककर) तुमने अगर घर का ही चार हिस्सा मे वाट दिया है तो, तो (टेबुल से चाकू लाकर) लो चाकू से मेरे भी चार टुकडे कर ला अग-अग काट डाला। (सब सिर झुकाए खडे हैं) यह वटवारा करके खुशिया मनाओ। जोरा से धम के नारे लगाओ भाषाओ के जुलूस निकालो। सीमाओ की जय-जयकार करो। सारे घर को जला डालो। तहस-नहस कर डालो इस

गुलिस्ता को खून की नदिया बहाओ, आग की होलिया जलाओ,
फूक डालो इस घर को, फूक डालो।

कमल (रोता हुआ) मा मा, ऐसा मत कहो। मा

मा (दद से) मैंने कभी स्वप्न मे भी नही सोचा था कि मरे राम-भरत अपन ही हाथा अपने घर का जला डालेंगे ? क्या मैंन यही दिन दखन के लिए तुम्ह जन्म दिया था ? खून पिलाकर पाला पोपा था ? (भावावेश म) बढो आगे बढो मा क टुकडे टुकडे कर डालो, (राती है।) आग लगा दो इस सार घर म

मधु (रोती सी) नही मा, नही, ऐसा मत कहो, मा

कमल (राता हुआ) नही मा नही नही नही

राजू (सुबकते हुए) मा मा, ऐसा न कहो। मा ऐसा न कहो।

वपा मा नही नही, नही।

मा तो पागलो ! इस घर म तुम लोगा न यह क्या तूफान मचा रखा है ? कभी मजहब के नाम पर खून खराबा करते हो, कभी सीमाओ को लेकर घर की तबाही करते हो, कभी भापा की आट म कहर मचाते हो छोटी छोटी बाता को लेकर घर म तोड-फोड करते हो। अपन हाथो अपन घर को आग लगाते हो अपन घर का बिखरा दते हो। (दर्द से) यह यह मुझस नही दखा जाता। यह नही दखा जाता मुझसे। अब यह बदाश्त नही हाता मुझस। (सिसकती है) इसस तो अच्छा है मैं अपन को ही मिटा दू। (चाकू उठाकर छाती म घोपना चाहती है। कमल भागकर हाथ से चाकू छीन-कर फेंक देता है।)

कमल (चीखकर) नही मा, नही (ठहरकर) हम हम धम के नाम पर कभी नही लडेंगे ? अब कभी ऐसा नही करेंगे।

(मा फूट फूटकर रो पडती है।)

मधु (दुख से) मा, मत रो मा ! हम इस गलती को कभी नही दोहरायेंगे।

वपा (गीले स्वर म) आज सुन लो मा, हम सीमाओ को लेकर यह पागलपन अब कभी नही करेंगे।

राजू (रोता हुआ) मा हमे माफ कर दो, मा! भायाआ को लकर हम कभी नही लडेंगे। तुम तो ममता की मूर्ति हो मा, हमारी गलतिया को माफ कर दो। हम अब कभी एसा नही करेंगे। आपके चरणा की कसम खाकर कहते है।

(सभी मा के चरणो म झुकते है, रोन लगते हैं)

मा (मा नीचे बैठकर, राजू वर्षा को बाहा म लेकर, कमल बाइ तरफ, मधु दाईं तरफ मा के कधे पर हाथ रखे खडे हैं। प्यार भरे स्वर मे) मर लाडलो! (राजू और वर्षा सिसकत है, कमल मधु सुबकत है। मा गदगद् होकर प्यार मे सिर पर हाथ फेरकर) मरे दिल के टुकडो! रोओ मत, मत रोओ, तुम्हारा रोना, इस मा से देखा नही जाता। मत रोआ मेरे घर के चिरागो! (खडी हो जाती है) तुम्हारी मा से तुम्ह रोता हुआ नही देखा जाता। मत रोओ, मेर लाडलो! मैंन तुम्ह माफ किया!

सब (एक साथ प्यार से चीखकर) मा!

मधु (गदगद् होकर) तुम कितनी अच्छी हो, मा!

वर्षा (स्नेह से) तुम कितनी प्यारी हो, मा!

राजू (चिपककर) तुम बहुत अच्छी हो, मा!

कमल (विश्वासपूण स्वर म) मा, तुमन हमे माफ कर दिया?

(सब मा से चिपक जात हैं)

मा पश्चात्ताप स बढकर कोई सजा नही होती, बेटो! अच्छा हुआ। समय रहते तुमने गलती को पहचान लिया और गलतिया को कभी न दोहराने का सकल्प ले लिया।

राजू हा मा आपकी सौगन्ध, इस, अपने इस (भारत के नक्शे की ओर सकेत करके) घर की सौगन्ध, हम ऐसा कभी नही करेंगे।

(धीरे धीरे पीछे स्वर उभरते हैं—हम एक थे, हम एक हैं, हम एक रहग)

एक साथ हा मा कभी नही करेंगे।

मा (दुख मिश्रित मुस्कान के साथ) शाबाश! मेरे बच्चो। मुझे तुमस यही आशा थी। साच लो अब आग बढकर जमीन की इन लकीरो

को मिटा दो, क्योकि जमीन पर बनी लकीरें तो मिट सकती है पर जब य लकीरें दिल पर खिंच जाती है तो वे पत्थर की लकीरें बन जाती हैं फिर लाख मिटाए, नहीं मिटती। (आवाज दो हम एक है, गीत धीमे धीमे बजता है) चलो, जमीन पर खिंची इन लकीरो को मिटा दो, इस बिखरे घर को प्रेम त्याग और कर्त्तव्य स जोडकर एक घर अपना बनाओ। (दर्शको की तरफ देखकर) मेरा घर तुम्हारा घर अपना घर हमारा घर हम सबका घर।

(मा धीरे धीरे चलती है। रगमच के बीचाबीच भारत के नक्शे के नीचे खडी हो जाती है। (रोशनी कम होती है, बच्चे लकीरें मिटाते है। बेबीस्पॉट भारत के नक्शे पर आकर धीरे धीरे फैलती है। मा का स्वर धीरे धीरे मन्द होता जाता है। गाने का स्वर धीरे-धीरे तेज होता जाता है।)

हा हम सबका घर सबका घर हम सबका घर

(पीछे सगीत)

एक है अपनी जमी,
एक है अपना गगन,
आवाज दो हम एक हैं।

उठो जवानो ने वतन, बाधे हुए सर से कफन,
उठो दक्खन की ओर स गगा ओ जमना की ओर स।
पजाब के दिल से उठो, सतलज के साहिल से उठो।

(पदा धीरे धीरे बन्द होता है गीत तेज गति स बजता है)

महाराष्ट्र की खाक स, देहली की अर्जेपाक म
बगाल मे गुजरात से, कश्मीर के बागान म
नफा मे राजस्थान से, कुल खाके हिन्दुस्तान से,
आवाज दो—हम एक हैं, हम एक हैं हम एक हैं।

○○○